

केंद्र व राज्य सरकार की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाना है : सीएम साय

विश्व केसरी■

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा है कि केंद्र सरकार ने राज्य से नक्सल समस्या के उन्मूलन के लिए हर संभव सहयोग दिया है। साय ने जोर देकर कहा कि पिछले वर्षों में नरेंद्र मोदी सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक नक्सलवाद का प्रभावी सफाया रहा है। साय शनिवार को यहाँ कुशाभाउ ठाकरे परिसर स्थित भाजपा प्रदेश कार्यालय में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सार्वजनिक सेवा एवं जन-समर्पण के 25 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आहूत प्रदेशस्तरीय कार्यशाला को सम्बोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री साय ने अपने सम्बोधन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और छत्तीसगढ़ के गहरे आत्मीय संबंधों को रेखांकित किया और पुरानी स्मृतियों को साझा करते हुए कहा कि राज्य निर्माण के समय नरेंद्र मोदी छत्तीसगढ़ भाजपा के प्रभारी थे। इस दौरान उन्होंने प्रदेश के प्रत्येक जिले का सघन दौरा कर संगठन को मजबूती दी थी। यही कारण है कि उनका छत्तीसगढ़ से बहुत पुराना और अटूट नाता है। प्रधानमंत्री बनने के बाद भी वे निरंतर राज्य के विकास के लिए विभिन्न योजनाएँ स्वीकृत कर रहे हैं। साय ने कहा कि नक्सलवाद से मुक्ति



के बाद अब बस्तर सहित पूरे वनांचल क्षेत्र के वनवासियों के जीवन में सकारात्मक बदलाव आ रहा है।

जो लोग नक्सल प्रभाव के कारण विकास की मुख्यधारा से कटे हुए थे, उन्हें अब बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य और उन्नत जीवन शैली का अधिकार मिल रहा है। इसी क्रम में श्री साय ने प्रदेश सरकार की उपलब्धियों पर भी चर्चा की। साय ने पार्टी कार्यकर्ताओं और जनप्रतिनिधियों से आह्वान किया कि वे सेवा ही संकल्प अभियान के माध्यम से केंद्र व राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को लेकर लाभार्थियों तक पहुँचें। साय ने अपने

सम्बोधन में वरिष्ठ भाजपा नेता शिवप्रकाश को लगातार तीसरी बार राष्ट्रीय सह-संगठन महामंत्री का दायित्व मिलने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ भी दीं।

सर्वोच्च पद पर रहते हुए भी प्रधानमंत्री मोदी संगठन सर्वोपरि की भावना का पालन करते हैं – शिवप्रकाश भाजपा राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री शिवप्रकाश ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सदैव असम्भव को सम्भव कर दिखाया है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण भूकम्प की त्रासदी झेल चुके गुजरात का पुनरुत्थान है। उन्होंने गुजरात को देश के सबसे अग्रणी राज्यों में

स्थापित कर एक मिसाल पेश की, जिसे भुलाया नहीं जा सकता। देश की जनता के विश्वास पर खरा उतरते हुए प्रधानमंत्री ने भारत को विकासशील से विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में ऐतिहासिक कार्य किए हैं। मेक इन इंडिया की सफलता और 24 करोड़ से अधिक लोगों को गरीबी रेखा से बाहर निकालना धरातल पर दिख रहे बदलाव का प्रमाण है। आज देश में विश्वस्तरीय रेलवे, अत्याधुनिक हवाई अड्डे और मजबूत राष्ट्रीय राजमार्गों का जाल बिछाया जा रहा है। केन्द्र सरकार की नीतियों के केंद्र में महिला सशक्तीकरण रहा है। जन-धन खातों के जरिए सीधे लाभ, राशन कार्ड में महिला को परिवार का मुखिया बनाना और तीन तलाक जैसी कुप्रथा से मुक्ति दिलाकर महिलाओं को उनका वास्तविक अधिकार दिया गया है। जम्मू-कश्मीर से धारा 370 को समाप्त का साहसिक कदम हो या भव्य राम मंदिर निर्माण के दशकों पुराने संकल्प की सिद्धि, सरकार ने देश की आस्था और सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। शिवप्रकाश ने कार्यकर्ताओं को प्रधानमंत्री के जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि देश के सर्वोच्च पद पर रहते हुए भी नरेंद्र मोदी संगठन सर्वोपरि की भावना का पालन करते हैं।

रोटरी क्लब ऑफ बिलासपुर ने ‘मॉनसून मिशन’ के तहत जरूरतमंद श्रमिकों को वितरित किए छाते

विश्व केसरी■ **बिलासपुर (सुरेश सिंह बैस)।** रोटरी क्लब ऑफ बिलासपुर द्वारा जिला थीम अगस्त माह ‘Monsoon Mission’ के अंतर्गत शनिवार, 29 अगस्त 2026 को बृहस्पति बाजार, बिलासपुर में जरूरतमंद कुलियों एवं रेजाओं (दैनिक वेतनभोगी श्रमिकों) के लिए ‘छाता वितरण कार्यक्रम’ का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का उद्देश्य मानसून के दौरान प्रतिकूल मौसम एवं बारिश के बीच खुले में कार्य करने वाले मेहनतकश श्रमिकों को आवश्यक सहयोग एवं सुरक्षा प्रदान करना था। इस अवसर पर जरूरतमंद श्रमिकों के बीच छातों का वितरण किया गया। यह पहल रोटरी क्लब की Service Above Self की भावना को सार्थक रूप से प्रदर्शित करती है।

रोटरी सदस्यों ने कार्यक्रम में सक्रिय रूप से सहभागिता करते हुए लाभार्थी श्रमिकों से संवाद किया और उनकी आवश्यकताओं को समझा। छाता प्राप्त करने वाले श्रमिकों ने रोटरी क्लब की इस संवेदनशील एवं उपयोगी पहल के



प्रति आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। रोटरी क्लब ऑफ बिलासपुर द्वारा इस पहल के माध्यम से समाज के मेहनतकश एवं जरूरतमंद वर्ग तक सेवा की भावना के साथ पहुंचने का प्रयास किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित रोटरी सदस्य .- रोटेरियन अमित चक्रवर्ती – अध्यक्ष, रोटरी क्लब ऑफ बिलासपुर.-रोटेरियन रंजीत पाल सिंह बाली – सचिव.-रोटेरियन राजीव भारद्वाज – कोषाध्यक्ष.-पास्ट प्रेसिडेंट रोटेरियन अनिल अग्रवाल.-पास्ट प्रेसिडेंट रोटेरियन हमीदा सिद्दीकी रोटेरियन एल. पी. गुप्ता.

डॉ. बी. आर. नंदा.रोटेरियन रोहित शिवहरे. रोटेरियन किरण सिंह. क्लब बॉय कृष्णा सूर्यवंशी रोटरी क्लब ऑफ बिलासपुर का यह प्रयास मानसून के दौरान जरूरतमंद श्रमिकों के लिए सुरक्षा एवं सुविधा सुनिश्चित करने की दिशा में एक सार्थक कदम रहा। क्लब भविष्य में भी समाज के विभिन्न वर्गों के लिए ऐसे सेवा प्रकल्पों के माध्यम से ‘Service Above Self’ की भावना को आगे बढ़ाने तथा समाज में स्थायी सकारात्मक प्रभाव (Lasting Impact) स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

रिश्तों की डोर में बंधा बचपन, भाई-बहन के प्यार का अनमोल पर्व

रक्षाबंधन विशेष 7 छोटी बहन की मासूम मुस्कान ने सजाया भाई-बहन के रिश्ते का संसार

विश्व केसरी■

रायपुर। रक्षाबंधन केवल कलाई पर बंधा एक धागा नहीं, बल्कि भाई-बहन के बीच प्रेम, विश्वास और स्नेह का वह अटूट बंधन है, जो उम्र के साथ और गहरा होता जाता है। इस तस्वीर में भाई अपनी नन्ही बहन को गोद में थामे हुए हैं, तो वहीं पास बैठा भाई भी अपनी छोटी बहन के साथ इस खूबसूरत पल का हिस्सा बना है। नन्ही बहन की मासूम मुस्कान और दोनों भाइयों के चेहरे की खुशी इस रिश्ते की मिठास को बयां कर रही है।



छोटी बहन घर की वह प्यारी किलकारी होती है, जिसके आने से परिवार में खुशियां और भाई के जीवन में एक नई जिम्मेदारी जुड़ जाती है। उसकी शरारतें कभी मुस्कान देती हैं तो कभी घर को हंसी-खुशी से भर देती हैं। रक्षाबंधन के दिन राखी की डोर इसी स्नेह को और मजबूत करती है। यह तस्वीर भी मानो यही संदेश दे रही है कि बचपन के ये खूबसूरत

पल ही जीवन की सबसे अनमोल यादें बन जाते हैं। भाई अपनी छोटी बहन को रक्षा का संकल्प लेता है, वहीं बहन अपने प्यार और विश्वास से भाई के जीवन को खुशियों से भर देती है। यही रक्षाबंधन की असली खूबसूरती है—एक धागा, हजारों भावनाएं और जीवनभर साथ निभाने का वादा।

हाथों से बनी 300 राखियों में झलका संस्कारों का रंग, बालिकाओं ने पुलिस जवानों को बांधा रक्षासूत्र

विश्व केसरी■

नवापारा-राजिम (अंशुल मिश्रा)। सरस्वती शिशु मंदिर नवापारा में रक्षाबंधन पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय की बालिकाओं एवं शिक्षिकाओं ने अपने हाथों से तैयार की गई राखियां लेकर नगर पालिका, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, आयुष्मान हॉस्पिटल कुरी तथा पुलिस थाना गोबरा नवापारा पहुंचकर रक्षासूत्र बांधा।

बालिकाओं ने नगर पालिका अध्यक्ष ओमकुमारी साहू, सामुदायिक आयुष्मान हॉस्पिटल के डॉ. पुनीत गोस्वामी तथा पुलिस थाना गोबरा नवापारा में थाना प्रभारी जितेंद्र दुबे एवं उनकी टीम की कलाई पर राखी बांधी। कन्या भारती प्रमुख सरोज कंधारी ने बताया कि लगभग 80 बच्चों ने करीब 300 राखियां तैयार कीं। इन



राखियों की विशेषता यह रही कि इन्हें बाजार से खरीदने के बजाय बालिकाओं ने स्वयं अपने हाथों से चावल, दाल, करायत, मोती, पिस्ता एवं अन्य पारंपरिक सामग्रियों से तैयार किया। बालिकाओं के हाथों से बनी इन राखियों में भारतीय संस्कृति, स्नेह और आत्मीयता की सुंदर झलक दिखाई दी।

इस अवसर पर थाना प्रभारी जितेंद्र दुबे ने कहा कि बेटियों एवं

मातृशक्तियों की सुरक्षा के लिए पुलिस जवान सदैव तत्पर हैं। उन्होंने बालिकाओं से कहा कि किसी भी प्रकार का छेड़खानी, दुर्व्यवहार या असुरक्षा का अनुभव होने पर तत्काल पुलिस को सूचना दें और आवश्यकता पड़ने पर 112 पर कॉल करें। उन्होंने बेटियों से निर्भीक रहने, कानूनी जानकारी रखने तथा मन लगाकर पढ़ाई करते हुए परिवार, समाज और गुरुजनों का मान बढ़ाने का आह्वान किया।

ग्राम अमचो में धूमधाम से मनाया गया भोजली पर्व, नन्हें बच्चों ने घर-घर जाकर दी शुभाशीष

विश्व केसरी■

बेमेतरा (अनिल त्रिपाठी)। छत्तीसगढ़ की लोकपरंपरा और संस्कृति से जुड़े भोजली पर्व का आयोजन ग्राम अमचो में हर्षोल्लास एवं धूमधाम के साथ किया गया। पर्व को लेकर गांव में सुबह से ही उत्साह का माहौल रहा। बच्चों एवं ग्रामीणों ने पारंपरिक रीति-रिवाजों के साथ भोजली की पूजा-अर्चना कर सुख-समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की।

भोजली पर्व के अवसर पर नन्हें बच्चे अपने सिर पर भोजली लेकर घर-घर पहुंचे और पारंपरिक भोजली गीत गाते हुए परिवारजनों को शुभाशीष प्रदान किया। बच्चों के आगमन से गांव का वातावरण लोकगीतों और पारंपरिक संस्कृति की रंगत से सराबोर हो गया।



करते हुए उन्हें स्नेह और आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर ग्रामीणों ने कहा कि भोजली पर्व छत्तीसगढ़ की समृद्ध लोकसंस्कृति, आपसी भाईचारे और प्रकृति के प्रति सम्मान का प्रतीक है। ऐसे आयोजनों से नई पीढ़ी को अपनी लोकपरंपराओं और

सांस्कृतिक विरासत से जुड़ने का अवसर मिलता है। ग्रामीणों ने आने वाली पीढ़ी तक भोजली पर्व की परंपरा को जीवंत बनाए रखने तथा लोकसंस्कृति के संरक्षण का संकल्प लिया।

पैराडाइज़ स्कूल में उत्साह और उमंग के साथ मनाया गया राष्ट्रीय खेल दिवस मेजर ध्यानचंद की जयंती पर विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर लिया हिस्सा

विश्व केसरी■

कांकेर (सीताराम शर्मा)। पैराडाइज़ हायर सेकेण्डरी स्कूल में शनिवार 29 अगस्त को मेजर ध्यानचंद की जयंती के अवसर पर राष्ट्रीय खेल दिवस हर्षोल्लास एवं उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय के प्री-प्राइमरी, प्राइमरी, मिडिल, हाई एवं हायर सेकेण्डरी कक्षाओं के छात्र-छात्राओं के लिए विभिन्न खेलकूद एवं मनोरंजक गतिविधियों का आयोजन किया गया। पूरे विद्यालय परिसर में खेल भावना, उत्साह और उमंग का माहौल देखने को मिला।

कार्यक्रम का शुभारंभ हायर सेकेण्डरी कक्षा के छात्र-छात्राओं द्वारा आकर्षक मार्च के साथ किया गया इसके पश्चात मिडिल कक्षा के छात्राओं के द्वारा सरस्वती वंदना प्रस्तुत की गई। कार्यक्रम के दौरान छात्राओं के द्वारा हॉकी के महान खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद के जीवन और उनके प्रेरणादायी योगदान पर भाषण प्रस्तुत किया गया।



विद्यार्थियों की प्रस्तुति ने कार्यक्रम में आध्यमिक एवं गरिमामय वातावरण का संचार किया, मेजर ध्यानचंद के खेल जगत में अतुलनीय योगदान को याद करते हुए उन्हें श्रद्धापूर्वक नमन किया, विद्यार्थियों को बताया गया कि खेल केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि शिक्षा का एक अभिन्न अंग है, जो हमारे शारीरिक एवं मानसिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर

विद्यार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक विकास को ध्यान में रखते हुए हायर सेकेण्डरी, मिडिल एवं प्राइमरी कक्षाओं के सिनियर जूनियर छात्र-छात्राओं के लिए हाउसेस के अनुसार विभिन्न इनडोर-आउटडोर गेम कबड्डी, खो-खो, वॉलीबॉल, रिले रेस, शॉर्ट पुट, उंची कूद, दौड़ आग वॉर, स्किप राउं, शतरंज, लुडो, कैरम एवं सब जूनियर खेलों के लिए पास दा गोर्गोई, कोआर्डिनेटर ऐक्वर्बा साहू, ग्लोरिया बॉल, स्वीच दा चेयर, थ्रो दा बॉल आदि खेल का आयोजन किया गया जिसमें नन्हें विद्यार्थियों से लेकर हायर सेकेण्डरी कक्षा के छात्र-छात्राओं तक सभी ने उत्साहपूर्वक प्रतियोगिता में भाग लेकर अपनी खेल प्रतिभा, अनुशासन और प्रतिस्पर्धा का शानदार प्रदर्शन किया।

स्पोर्ट्स विभाग एवं खेल शिक्षक, अवतार सिंह, संतोष कुमार ठाकुर एवं रामेश्वरी साहू के मार्गदर्शन में सभी गतिविधियां सुव्यवस्थित तरीके से संचालित की गईं। स्कूल के चार हाउसेस रेड हाउस, येलो हाउस, ऑरेंज हाउस

एवं ग्रीन हाउस में प्रथम विजेता टीम ऑरेंज हाउस द्वितीय येलो हाउस और तृतीय स्थान पर ग्रीन हाउस रहा।

राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर विभिन्न खेल गतिविधियां प्राचार्य रश्मि रजक, मैनेजर योगेश रजक, वरिष्ठ शिक्षक प्रीति झा, रूबी खान, पंकज ब्राई, कोआर्डिनेटर दीर्पांजली गोर्गोई, कोआर्डिनेटर ऐक्वर्बा साहू, ग्लोरिया रजक, वर्षा रामानी, तीरथ साहू, कृष्णापद कुंभकार, संगीता भारती, शांति लीना नेताम, रचना शर्मा, जीतूदास माडले, एस.मर्सी, सरिता मिश्रा, टाकेश्वर साहू, अरविंद मदीतो, सुकदेव सरकार, पंकटेश, शिखा मेहरा, पार्वती गजबल्ला, प्रीतिलता सोरी, मनीषा साहू, सलमा खान, लक्ष्मीनारायण नामदेव, लीना जैन, नंदनी साहू, पूजा खरे, नेहा चौहान, दीक्षा राठीर, अरसिया, दीपिका सेन, रिनु, पुष्पा देवी, शैली यादव, मंजु साहू, मामानी कुंभकार, अनिल कुमार, प्रियंका, सुरेन्द्र प्रधान, मर्सी, थेजासेनो, नौशिन आदि शिक्षकों का विशेष योगदान रहा।

भोजली तिहार पर गांव-गांव निकली शोभायात्रा, महिलाओं और युवतियों ने बढ़ाया उत्सव का रंग

विश्व केसरी■

बेमेतरा (अनिल त्रिपाठी)। छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति और परंपराओं से जुड़े भोजली तिहार का पर्व शनिवार को जिलेभर में उत्साह और उल्लास के साथ मनाया गया। गांव-गांव में महिलाओं और युवतियों ने सिर पर भोजली रखकर पारंपरिक गीत गाते हुए शोभायात्रा निकाली। इस दौरान गांव की गलियों में छत्तीसगढ़ी लोक संस्कृति की झलक दिखाई दी। बड़ी संख्या में सभी वर्ग की महिलाएं, युवतियां और ग्रामीण उत्सव में शामिल हुए। पारंपरिक वेशभूषा और लोकगीतों के साथ निकली शोभायात्रा ने पूरे गांव का माहौल भक्तिमय और उत्सवमय कर दिया।

भोजली तिहार को लेकर कई दिनों से ग्रामीण क्षेत्रों में तैयारियां चल रही थीं। महिलाओं और युवतियों ने घरों में विधि-विधान से भोजली बोई और उसकी देखभाल की। भोजली के पौधे तैयार होने

के बाद तिहार के दिन इन्हें टोकरी में सजाकर शोभायात्रा निकाली गई। गांव के प्रमुख मार्गों से होकर निकली यात्रा में महिलाएं पारंपरिक भोजली गीत गाती हुई शामिल हुईं। ग्रामीणों ने भी जगह-जगह शोभायात्रा का स्वागत किया।

उत्कृष्ट भोजली सजावट को किया पुरस्कृत

गांवों में भोजली तिहार के अवसर पर अलग-अलग परिवारों और महिला समूहों ने आकर्षक तरीके से भोजली तैयार की। भोजली की हरियाली, सजावट और पारंपरिक तरीके से किए गए प्रदर्शन को लेकर महिलाओं में विशेष उत्साह रहा। कई स्थानों पर स्थानीय जनप्रतिनिधियों की मौजूदगी में उत्कृष्ट भोजली प्रदर्शन करने वाले समूहों को पुरस्कृत भी किया गया। पुरस्कार मिलने से महिलाओं और युवतियों में उत्साह और बढ़ गया। स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने कहा कि भोजली केवल एक पर्व नहीं,



बल्कि छत्तीसगढ़ की लोक परंपरा और सामाजिक एकजुटता का प्रतीक है। ऐसे आयोजनों के माध्यम से नई पीढ़ी को अपनी संस्कृति और परंपराओं से जोड़ने का अवसर मिलता है।

लोकगीतों से गुंजाता रहा गांव

शोभायात्रा के दौरान महिलाओं ने पारंपरिक भोजली गीत गाए। एक-दूसरे को भोजली भेंट कर सुख-समृद्धि की कामना की गई। ग्रामीण क्षेत्रों में भोजली

तिहार के दौरान आपसी भाईचारे और सौहार्द का वातावरण देखने को मिला। उम्र की सीमाओं से परे महिलाएं और युवतियां उत्साह के साथ कार्यक्रम में शामिल हुईं। बुजुर्ग महिलाओं ने नई पीढ़ी की युवतियों को भोजली की परंपरा और उससे जुड़े लोकगीतों की जानकारी भी दी। गांवों में निकली शोभायात्रा में बच्चे और पुरुष भी शामिल हुए। कई जगहों पर ग्रामीणों ने शोभायात्रा के लिए रास्ते को सजाया। पारंपरिक लोकगीतों जयकारों के बीच शोभायात्रा गांव के प्रमुख मार्गों से होते हुए स्थानीय तालाब तक पहुंची।

तालाब में किया भोजली का विसर्जन

शोभायात्रा के बाद स्थानीय तालाबों में भोजली विसर्जन का कार्यक्रम हुआ। महिलाओं ने पारंपरिक रीति-रिवाज को अनुसार भोजली का विसर्जन किया। इस दौरान परिवार और गांव की सुख-

समृद्धि, अच्छी बारिश और अच्छी फसल की कामना की गई। विसर्जन के बाद महिलाओं ने एक-दूसरे को भोजली भेंट कर शुभकामनाएं दीं।

ग्रामीणों के अनुसार भोजली तिहार खेती-किसानी से भी जुड़ी परंपरा है। भोजली की हरियाली को अच्छी फसल और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। यही वजह है कि ग्रामीण अंचल में इस पर्व को विशेष महत्व दिया जाता है।

नई पीढ़ी को परंपरा से जोड़ने का प्रयास जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में भोजली तिहार के आयोजन में इस बार युवतियों की भी बड़ी भागीदारी रही। बुजुर्ग महिलाओं के साथ युवतियों ने भोजली तैयार करने से लेकर शोभायात्रा और विसर्जन तक की परंपराओं में हिस्सा

लिया। इससे वर्षों पुरानी लोक परंपरा को आगे बढ़ाने का संदेश भी दिया गया। ग्रामीणों का कहना है कि

आधुनिकता के दौर में छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति को बचाए रखने के लिए ऐसे पारंपरिक आयोजनों की आवश्यकता है। भोजली तिहार सामूहिकता, भाईचारे और प्रकृति के प्रति सम्मान का संदेश देता है। गांव-गांव में आयोजित कार्यक्रमों में सभी वर्गों की भागीदारी है। इस पर्व को सामाजिक समरसता का स्वरूप दिया।

बेमेतरा जिले में भोजली तिहार के अवसर पर हुए आयोजनों ने एक बार फिर छत्तीसगढ़ी संस्कृति की जीवंत तस्वीर प्रस्तुत की। पारंपरिक गीत, शोभायात्रा, भोजली प्रदर्शन, सम्मान और तालाब में विसर्जन के साथ ग्रामीण अंचल में दिनभर उत्सव का माहौल बना रहा। महिलाओं और युवतियों की बड़ी भागीदारी ने पर्व को रौनक बढ़ाई। वहीं स्थानीय जनप्रतिनिधियों द्वारा उत्कृष्ट भोजली प्रदर्शन को सम्मानित किए जाने से आयोजन को प्रोत्साहन मिला।

प्राथमिक शाला भवन जर्जर, ग्रामीण चिंतित

विश्व केसरी■
दुर्गुकोंदल। ग्राम चाहचाड़ की प्राथमिक शाला भवन जर्जर होने से चिंतित ग्रामीणों ने भवन के संबंध में सार्वजनिक बैठक बुलाकर प्रस्ताव पारित किया है। कि ग्राम चाहचाड़ में नये स्कूल भवन की निर्माण होना चाहिए। अतिरिक्त कक्ष से काम नहीं चलेगा। ग्रामीणों गांव पारित प्रस्ताव को सरपंच को सौंपा है, कि ग्राम चाहचाड़ नये भवन का निर्माण करायें। ग्राम पंचायत से नये और पर्याप्त कमरे हों। इस तरह की स्वीकृति दिलाने पहल करें।

ग्रामवासियों की महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। शाला प्रबंधन समिति अध्यक्ष कमल सलाम, रमेश दुग्गा ने बताया कि शिक्षा ही समाज में, गांव में तरक्की लायेगी। लेकिन हमारे गांव की स्कूल के भवन सहित शैक्षणिक संसाधनों के लिए भी तरस रहे हैं।

स्कूल भवन जर्जर है, सीपेज को बचाने तिरपाल ढककर बच्चों को बैठकर पढ़ने की व्यवस्था किये। बच्चे जानते हैं, कि स्कूल भवन जर्जर है, जो खतरा से कम नहीं है। फिर भी बच्चे डरे सहमें जर्जर भवन के नीचे पढ़ाई करते हैं। आजकल स्मार्ट क्लास की बात कही जा रही है, भवन ही जर्जर है, इस हालात स्मार्ट क्लास की कल्पना करना ही



मुश्किल है। यहां अतिरिक्त कक्ष से काम नहीं चलेगा। नये भवन 5कमरे वाला बनना चाहिए।।

ग्रामीण गणेश दुग्गा, हीरू सर्फे, कल्याण दुग्गा, छबिलाल दुग्गा, संतु सलाम, लच्छू सलाम, बाजू कोमरा ने कहा कि चाहचाड़ में लौह खदान है, हर साल करोड़ों रुपए रायल्टी जिला संस्थान न्यास निधि में जमा होती है। यहां स्कूल भवन बनना चाहिए। लेकिन करोड़ों

के राजस्व हमारे गांव जिला प्रशासन को देती है, और हमारे बच्चों के पक्का भवन नहीं है, भवन जर्जर है, कब ढह जाते ठिकाना नहीं है। यहां के रायल्टी से कांकर जिले के दूसरे विकासखंड में विकास होती है, जिला मुख्यालय को माडल बनाया जा रहा है, लेकिन चाहचाड़ गांव का दुर्भाग्य है, कि यहां बच्चे भवन के लिए तरस रहे हैं, तिरपाल से ढके भवन के नीचे पढ़ रहे हैं, कहीं

खनिज संसाधन से भरे-पूरे गांवों के बच्चों को अंधकार में ले जाने का षड्यंत्र तो नहीं है। एक ही मांग में स्वीकृति होनी चाहिए। पर कई बरस बीत गये। नये भवन की स्वीकृति नहीं मिली। आजकल आनलाईन पढ़ाई हो रही है, स्कूल में पढ़ाने के नये नये शैक्षणिक सामग्री दी जाती है, लेकिन हमारे गांव में भवन नहीं है। और ना ही शैक्षणिक संसाधन की व्यवस्था है। इसलिए 28अगस्त

को गांव में सार्वजनिक बैठक कर निर्णय लिया गया है, कि ग्राम चाहचाड़ में जिला प्रशासन से नये भवन की स्वीकृति दी जाये। अन्यथा स्कूल में तालाबंदी कर विरोध प्रदर्शन करेंगे। इसके बाद भी मांग पूरी नहीं हुई तो माईस मार्ग पर धरना प्रदर्शन, चक्काजाम करेंगे। इन्होंने कि स्कूल भवन के लिए स्वीकृति होने तक सभी ग्रामीण मिलकर लड़ाई करने एकजुट हो गए हैं।

स्मार्ट मीटर के विरोध में कांग्रेस नेता कार्यकर्ता उतरे घर-घर संपर्क अभियान में

विश्व केसरी■
राजिम (शेखर मिश्रा)। फिंगेश्वर ब्लॉक में स्मार्ट मीटर से बढ़ते बिजली बिल के मुद्दे को लेकर कांग्रेस ने घर-घर चलो अभियान तेज कर दिया है। छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी के निर्देश पर ब्लॉक कांग्रेस कमेटी द्वारा 27 अगस्त को लफंदी धूमा परतेवा श्याम नगर बरौंडा सिंधोरी में बुध काग्रेसियों की बैठक आयोजित की गई बैठक में कार्यकर्ताओं को स्मार्ट मीटर से संबंधित समस्याओं को लेकर उपभोक्ताओं के बीच पहुंचने की जिम्मेदारी सौंपी गई। कांग्रेस नेताओं ने कहा की जिन उपभोक्ताओं के यहां स्मार्ट मीटर लगाने के बाद बिजली बिल में कथित रूप से अनाप-शनाप वृद्धि हुई है और वे इससे असंतुष्ट हैं उनसे स्मार्ट मीटर बदलने की मांग को लेकर सहमति फार्म भरवाया जाएगा। बुध पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं को घर-घर जाकर उपभोक्ताओं से संवाद करने और फार्म जमा करने के निर्देश दिए गए। बैठक में ब्लॉक मॉनिटरिंग प्रभारी डी के ठाकुर, मंडल प्रभारी डॉ रमेश साहू ,देवेन्द्र साहू, हिमेश्वरी साहू तथा मंडल अध्यक्ष होरीलाल वर्मा



की विशेष उपस्थित रही। ब्लॉक प्रभारी डी के ठाकुर ने कहा कि स्मार्ट मीटर के कारण आम उपभोक्ताओं पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ पढ़ने की शिकायतें सामने आ रही है उन्होंने कहा कि काग्रेस जनता की समस्याओं को लेकर उनके बीच जाएगी और अभियान को लगातार आगे बढ़ाएगी

श्याम नगर मंडल के बरौंडा सेक्टर में भी घर-घर पहुंच रहे कार्यकर्ता

इसी क्रम में 27 अगस्त को श्याम नगर मंडल के बरौंडा सेक्टर में भी स्मार्ट मीटर के मुद्दे को लेकर घर-घर चलो अभियान जारी रहा। ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के

निर्देशानुसार मंडल मॉनिटरिंग प्रभारी डीके ठाकुर मंडल प्रभारी डॉ रमेश साहू सहप्रभारी देवेन्द्र सहप्रभारी साहू हिमेश्वरी साहू मंडल अध्यक्ष होरीलाल वर्मा लफंदी सेक्टर अध्यक्ष पूरन साहू बुध अध्यक्ष दीनदयाल साहू पंचायत अध्यक्ष जानकी ध्रुव परतेवा बुध अध्यक्ष घनश्याम ध्रुव धूमा बुध अध्यक्ष धर्मवीर वर्मा पंचायत अध्यक्ष माखन वर्मा श्याम नगर बुध अध्यक्ष चंद्रिका साहू बड़ौडा सेक्टर अध्यक्ष विष्णु जांगड़े की बुध अध्यक्ष शंकर वर्मा बुध अध्यक्ष गौतारीया चेलक आदि उपस्थित थे।

शासकीय प्राथमिक विद्यालय दाढ़ी में मनाया गया भोजली उत्सव पर्व

विश्व केसरी■
बेमेतरा (अनिल त्रिपाठी)। शासकीय प्राथमिक विद्यालय दाढ़ी में भोजली पर्व मनाया गया जिसमें विद्यालय में एक त्यौहार उत्सव देखने को मिला हमारी संस्कृति की विशेष पहचान भोजली पर्व लोक गीतों की विशेष पहचान होती है।

संस्था प्रमुख चंद्रभान सिंह धुर्वे ने सबसे पहले भोजली का पूजा अर्चना किया गया जिसमें भोजली माता का सुमरन किया गया संस्था प्रमुख ने बताया कि भोजली पर्व इस लिये मनाया जाता है कि सावन माह में नवमी तिथि या पंचमी तिथि को इसको गेहूं या धान के बीज को मिट्टी में टोकरी के माध्यम से बोया जाता इसे सावन माह तक रखा जाता है



भोजली पर्व फसलों की अच्छी उपज हो धन धान्य से परिपूर्ण हो सुख समृद्धि की कामना की जाती है बच्चों को रक्षाबंधन की हार्दिक बधाई शुभकामनाएं दी गई एवं बच्चों को मिठाई वितरण किया

गया कार्यक्रम में संस्था से महेश्वर सिंह चंदेल प्रतिमा भंडारी आरती गुप्ता भुनेश्वरी कुंभकार राजिम जायसवाल ललिता कुंभकार अनुसुइया निषाद आदि उपस्थित थे।

रक्षाबंधन पर जिला जेल बेमेतरा में दिखा भाई-बहन के अटूट प्रेम का भावुक दृश्य

विश्व केसरी■
बेमेतरा (अनिल त्रिपाठी)। रक्षाबंधन के पावन पर्व पर जिला जेल बेमेतरा में भाई-बहन के अटूट प्रेम और स्नेह का भावपूर्ण दृश्य देखने को मिला।

जेल में निरुद्ध अपने भाइयों को राखी बांधने के लिए बहनें बड़ी संख्या में पहुंचीं। बहनों ने अपने बंदी भाइयों की कलाई पर रक्षा सूत्र बांधा, माथे पर तिलक लगाया और उनके सुखद एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इस दौरान कई आंखें नम भी हुईं।

इस अवसर पर जेल अधिकक्ष के निर्देशन में जेल प्रशासन द्वारा विशेष व्यवस्थाएं की गई थीं। बहनों के लिए बैठने, सुरक्षा और सुगमता से राखी बंधवाने की पूरी व्यवस्था



की गई थी, जिससे त्योहार शांतिपूर्ण और गरिमामय माहौल में संपन्न हो सका।

यह आयोजन सिर्फ एक त्योहार

नहीं, बल्कि इस बात का संदेश था कि परिस्थिति कोई भी हो, भाई-बहन का पवित्र रिश्ता और प्रेम हमेशा अटूट रहता है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ रायपुर ग्रामीण ने सेवा बस्ती एवं सीआरपीएफ कैंप में मनाया रक्षाबंधन उत्सव

विश्व केसरी■
नवापारा-राजिम (अंशुल मिश्रा)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ रायपुर ग्रामीण द्वारा रक्षाबंधन के पावन अवसर पर सामाजिक समरसता एवं राष्ट्रसेवा की भावना के साथ विभिन्न सेवा गतिविधियों का आयोजन किया गया।

इसी क्रम में स्वयंसेवकों द्वारा सेवा बस्ती खपरी (अभनपुर) में पहुंचकर वहां के नागरिकों एवं बहनों से आत्मीय संवाद करते हुए रक्षासूत्र बांधा गया। इस अवसर पर समाज में भाईचारा, आपसी सद्भाव और सामाजिक एकता का संदेश दिया गया। इसके पश्चात स्वयंसेवक सीआरपीएफ कैंप थनौद पहुंचे, जहां उन्होंने देश की सुरक्षा में समर्पित सीआरपीएफ के वीर जवानों के साथ रक्षाबंधन



उत्सव मनाया। स्वयंसेवकों ने जवानों को रक्षासूत्र बांधकर उनके प्रति सम्मान एवं कृतज्ञता व्यक्त की। इस अवसर पर स्वयंसेवकों ने कहा कि रक्षाबंधन केवल भाई-बहन के प्रेम का पर्व नहीं, बल्कि समाज में परस्पर विश्वास, सुरक्षा, सेवा और राष्ट्रभाव को मजबूत करने का पर्व भी है। देश की सीमाओं और आंतरिक सुरक्षा में तैनात जवानों का त्याग एवं समर्पण हम सभी के लिए प्रेरणादायी है।

रेत से भरे तेज रफ्तार ट्रैक्टर ने मासूम को कुचला, मौके पर मौत

रक्षाबंधन की खुशियां मातम में बदलीं, आक्रोशित ग्रामीणों ने किया चक्काजाम

विश्व केसरी■
नवापारा-राजिम (अंशुल मिश्रा)। रक्षाबंधन के पर्व पर शुक्रवार सुबह एक दर्दनाक सड़क हादसे ने खुशियों के माहौल को मातम में बदल दिया। कुरुद थाना क्षेत्र के ग्राम नारी में रेत से भरे तेज रफ्तार ट्रैक्टर की चपेट में आने से एक मासूम की मौके पर ही मौत हो गई। हादसे की खबर फैलते ही गांव में शोक की लहर दौड़ गई, वहीं आक्रोशित ग्रामीण सड़क पर जत आएं।

बताया गया कि शुक्रवार सुबह ग्राम नारी से रेत से भरा एक ट्रैक्टर गुजर रहा था। इसी दौरान तेज रफ्तार ट्रैक्टर की चपेट में एक मासूम बच्चा आ गया। हादसा इतना भयावह था कि बच्चे ने घटनास्थल पर ही दम तोड़ दिया।



मासूम की मौत से भड़का ग्रामीणों का गुस्सा

घटना की जानकारी मिलते ही बड़ी

से आक्रोशित लोगों ने रेत परिवहन में लगे ट्रैक्टर को आग के हवाले कर दिया। वहीं, ट्रैक्टर चालक के साथ भी मारपीट किए जाने की जानकारी सामने आई है।

ग्रामीणों का आरोप है कि गांव से होकर रेत परिवहन करने वाले ट्रैक्टर तेज रफ्तार में दौड़ते हैं। इसे लेकर ग्रामीण पहले से नाराज थे। शुक्रवार को हुए इस दर्दनाक हादसे के बाद उनका आक्रोश भड़क उठा।

रक्षाबंधन के दिन मासूम की अस्मय मौत ने पूरे गांव को झकझोर कर रख दिया। एक ओर जहां घरों में त्योहार की खुशियां थीं, वहीं हादसे के बाद ग्राम नारी में मातम और आक्रोश का माहौल बन गया।

संख्या में ग्रामीण नारी बस स्टैंड के पास एकत्र हो गए और सड़क पर चक्काजाम कर दिया। मासूम की मौत

बसना (अशोक प्रधान)। मानव सेवा और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को मजबूत करने के उद्देश्य से भूकेल हाई स्कूल परिसर में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर एवं स्वास्थ्य जांच शिविर का सफल आयोजन किया गया। विश्व हिंदू परिषद के द्वारा माता सावित्री बाई फुले समूह के सहयोग से बजरंग दल, मातृ शक्ति, दुर्गा बाहिनी एवं भगवती मानव कल्याण संगठन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस शिविर में बड़ी संख्या में लोगों ने सहभागिता की। कार्यक्रम में स्वैच्छिक रक्तदान के साथ-साथ विभिन्न स्वास्थ्य जांच सुविधाएं उपलब्ध कराई गईं। जिससे क्षेत्र में लोगों को एक ही स्थान पर स्वास्थ्य संबंधी आवश्यक सेवाओं का लाभ प्राप्त हुआ।

शिविर के दौरान लोगों में रक्तदान के प्रति जागरूकता लाने का विशेष प्रयास किया



गया। आयोजकों ने बताया कि रक्तदान केवल किसी जरूरतमंद व्यक्ति के जीवन को बचाने का माध्यम ही नहीं, बल्कि समाज के प्रति हमारी जिम्मेदारी और मानवीय संवेदना का प्रतीक भी है। दुर्घटना, गंभीर बीमारी, प्रसव अथवा आपातकालीन परिस्थितियों में रक्त की आवश्यकता पड़ने पर समय पर उपलब्ध रक्त किसी व्यक्ति के लिए जीवनदायिनी साबित हो सकता है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए लोगों को

स्वैच्छिक रक्तदान के लिए प्रेरित किया गया। रक्तदान शिविर के साथ स्वास्थ्य परीक्षण की भी व्यापक व्यवस्था की गई थी। शिविर में ब्लड प्रेशर (बीपी), ब्लड शुगर एवं ईसीजी जैसी आवश्यक जांच की गई। स्वास्थ्य संबंधी किसी समस्या या आवश्यकता वाले लोगों को चिकित्सकीय परामर्श भी दिया गया। इसीजी जांच के माध्यम से लोगों की हृदय संबंधी स्वास्थ्य की प्राथमिक जानकारी प्राप्त हुई।

रिश्तों की डोर में बंधा छुरा अंचल, भाई की कलाई पर सजी राखी तो छलक उठा बहनों का स्नेह

विश्व केसरी■
छुरा (मानसिंह निषाद)। भाई-बहन के अटूट प्रेम, विश्वास, स्नेह और समर्पण का प्रतीक पवित्र रक्षाबंधन पर्व शनिवार को छुरा नगर सहित पूरे अंचल में बड़े ही धूमधाम, उत्साह और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सुबह से ही नगर और ग्रामीण अंचलों में रक्षाबंधन पर्व की अलग ही रौनक देखने को मिली। घर-घर में पर्व को लेकर उत्साह का माहौल रहा। बहनों ने पूजा की थाली सजाई और शुभ मुहूर्त में अपने भाइयों की कलाई पर प्रेम और विश्वास की डोर बांधी। वहीं भाइयों ने भी बहनों की रक्षा, सम्मान और हर सुख-दुख में साथ निभाने का संकल्प लेते हुए उन्हें उपहार भेंट किए।



रक्षाबंधन के अवसर पर सुबह से ही घरों में विशेष तैयारियां शुरू हो गई थीं। बहनें नए एवं पारंपरिक परिधानों में सज-संवरकर अपने भाइयों के पास पहुंचीं। पूजा की थाली में रोली, अक्षत, दीपक, मिठाई और राखी सजाकर पहले भाइयों का तिलक किया गया। इसके बाद बहनों ने भाइयों की

आरती उतारी और उनकी कलाई पर राखी बांधकर उनके सुखी, स्वस्थ एवं दीर्घायु जीवन की कामना की। राखी बंधवाने के बाद भाइयों ने बहनों को मिठाई खिलाई और उपहार देकर उनके प्रति अपने प्रेम का इजहार किया।

दूरियों को मिटाकर घर पहुंचे भाई-बहन - रक्षाबंधन का

पर्व उन भाई-बहनों के लिए भी बेहद खास रहा, जो रोजगार, पढ़ाई या अन्य कारणों से एक-दूसरे से दूर रहते हैं। पर्व की खुशियां मनाने के लिए कई भाई अपनी बहनों के घर पहुंचे, वहीं अनेक बहनें भी अपने मायके पहुंचीं। लंबे समय बाद भाई की कलाई पर राखी बांधने और बहन के हाथों से मिठाई खाने का अवसर भावुक कर देने वाला रहा। कई घरों में वर्षों पुरानी यादें ताजा हुईं और परिवार के सदस्यों ने मिलकर पर्व की खुशियां साझा कीं। राखी बांधते समय बहनों के चेहरे पर जहां भाई के प्रति प्रेम और अपनाना नजर आया, वहीं भाइयों की आंखों में भी बहनों के लिए स्नेह साफ दिखाई दिया। छोटे बच्चों में राखी को लेकर विशेष

उत्साह रहा। बच्चों ने अपने भाई-बहनों के साथ रक्षाबंधन की खुशियां मनाते हुए दिनभर खूब हस्ते की।

राखी और मिठाई की दुकानों पर रही जबरदस्त भीड़

रक्षाबंधन को लेकर छुरा नगर का बाजार भी पूरी तरह गुलजार रहा। बाजार में रंग-बिरंगी और आकर्षक राखियों की जमकर बिक्री हुई। बच्चों से लेकर युवतियों और महिलाओं तक सभी अपनी पसंद की राखियां खरीदते नजर आए। वहीं मिठाई दुकानों पर भी सुबह से ही ग्राहकों की भीड़ लगी रही। भाइयों के लिए राखी के साथ मिठाई और बहनों के लिए उपहार खरीदने का सिलसिला देर शाम तक चलता रहा।

महासमुंद में उत्कल ब्राह्मण समाज की नई कार्यकारिणी की प्रथम बैठक संपन्न

विश्व केसरी■
बसना (अशोक प्रधान)। उत्कल ब्राह्मण समाज जिला महासमुंद की नई कार्यकारिणी की गठन पश्चात प्रथम बैठक आदियोगी योगशाला मंदिर पिथौरा में सम्पन्न हुई। सर्वप्रथम भगवान परशुराम एवं जगन्नाथ महाप्रभु की पूजा अर्चना आचार्य संकर्षण पंडा द्वारा समाज के अध्यक्ष एवं विप्र जनों की उपस्थिति में कराया गया।

तदुपरांत ब्लॉक सचिव अरुण देवता द्वारा मंच संचालन कर उत्कल ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष एवं अन्य वरिष्ठ जनों का ब्लॉक पदाधिकारी के माध्यम से क्रमशः पुष्पाहार से स्वागत कराया गया। तत्पश्चात पिथौरा ब्लॉक अध्यक्ष यू के दास द्वारा जिला अध्यक्ष नित्यानंद मिश्रा को अंग वस्त्र भेंट कर स्वागत किया गया एवं पी सी त्रिपाठी ब्लॉक



संरक्षक एवं जिला के वरिष्ठ उपाध्यक्ष द्वारा समाजसेवी एवं वरिष्ठ सदस्य बलराम पाणिग्राही का अंग वस्त्र भेंट कर आशीर्वाद दिया। उसके पश्चात ब्लॉक के कर्मदा अध्यक्ष यु के दास द्वारा स्वागत भाषण में उपस्थित सदस्यों को अभिवादन कर धन्यवाद देते हुए उद्बोधन के अंतर्गत उत्कल ब्राह्मण समाज पिथौरा के अभी तक 188 विद्वान विप्र जनों को संपूर्ण सदस्यता अभियान के तहत मुख्य धारा में जोड़कर पारिवारिक प्राथमिक की सदस्य बनाया गया। अध्यक्ष श्री दास द्वारा बताया गया कि भौगोलिक

दृष्टिकोण से व्यापक क्षेत्रफल क्षेत्रफल होने के कारण संपूर्ण विकास खंड को तीन भागों में विभक्त किया गया है। और तीनों भागों के लिए अलग-अलग प्रभारी की नियुक्ति की गई है। जिसमें पिथौरा जोन की प्रभारी जयंत महापात्र और ग्रामों की संख्या -20 सदस्यों की संख्या- 74 संकरा जोन में प्रभारी शंभू शंकर मिश्रा ग्रामों की संख्या -14 सदस्यों की संख्या- 55 सल्टीह जोन में प्रभारी नित्यानंद पंडा ग्रामों की संख्या- 10 सदस्यों की संख्या -59 की विस्तृत जानकारी कार्यकारिणी को प्रदान की गई।

भारत के विकास के लिए सुशासन अत्यंत महत्वपूर्ण : केंद्रीय राज्य मंत्री जितेंद्र सिंह

विश्व केसरी■
नई दिल्ली। केंद्रीय राज्य मंत्री जितेंद्र सिंह ने शुक्रवार को कहा कि भारत के विकास के लिए सुशासन बहुत जरूरी है। उन्होंने देश के विकास में कंपनी सचिवों के ज्यादा योगदान की बात कही।

मंत्रालय के एक बयान के अनुसार, ‘इंस्टीट्यूट ऑफ कंपनी सेक्रेटरीज ऑफ इंडिया’ (आईसीएसआई) के एक प्रतिनिधिमंडल के साथ बातचीत में उन्होंने कहाकि कॉर्पोरेट और आर्थिक इकोसिस्टम में गवर्नेंस के तरीकों को मजबूत करने में उनकी पेशेवर विशेषज्ञता अहम भूमिका निभा सकती है।

कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने नैतिक उद्यमिता और सुशासन की मजबूत संस्कृति बनाने के महत्व पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि



आईसीएसआई जैसे पेशेवर संस्थानों की गवर्नेंस मानकों को बढ़ावा देने और संस्थागत उत्कृष्टता में योगदान देने वाले तरीकों को आसान बनाने में अहम भूमिका है।

मंत्री ने पंचायत गवर्नेंस और स्थानीय निकाय गवर्नेंस से जुड़ी

के गवर्नेंस इकोसिस्टम में कंपनी सचिवों की बढ़ती भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि ज़िम्मेदार गवर्नेंस, नैतिक तौर-तरीकों और संस्थागत जवाबदेही को बढ़ावा देने में कॉर्पोरेट सेक्टर के पेशेवरों की अहम भूमिका है। मंत्री ने बदलती जरूरतों के अनुसार अपने मानकों और तौर-तरीकों को लगातार बेहतर बनाने में पेशेवर निकायों की भूमिका की सराहना की। मंत्री ने कॉर्पोरेट गवर्नेंस में उत्कृष्टता दिखाने वाले संगठनों और व्यक्तियों को पहचानने और प्रोत्साहित करने के महत्व पर भी जोर दिया। इस संवाद में आईसीएसआई की पेशेवर मानकों, सेक्रेटेरियल मानकों, कॉर्पोरेट गवर्नेंस और ‘कॉर्पोरेट गवर्नेंस में उत्कृष्टता को हकीकत में बदलने के लिए लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड’ से जुड़ी पहलों पर भी चर्चा हुई।

सीबीजी कीमत बढ़ोतरी से सीएनजी और पीएनजी उपभोक्ताओं पर नहीं पड़ेगा बड़ा बोझ

विश्व केसरी■
नई दिल्ली। पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय ने शनिवार को उन आशंकाओं को खारिज कर दिया, जिनमें कहा जा रहा था कि गोबरधन योजना के तहत संपीड़ित जैव गैस (सीबीजी) की संशोधित खरीद कीमत से सीएनजी और घरेलू पाइपड नेचुरल गैस (पीएनजी) उपभोक्ताओं पर बड़ा अतिरिक्त वित्तीय बोझ पड़ सकता है। मंत्रालय ने स्पष्ट किया कि इस तरह के आकलन असंगत मान्यताओं पर आधारित हैं और वास्तविक प्रभाव काफी सीमित रहेगा।

मंत्रालय ने बताया कि मौजूदा मूल्य निर्धारण व्यवस्था के तहत सीबीजी उत्पादकों को दिया जाने वाला भुगतान सीएनजी के खुदरा बिक्री मूल्य के 85 प्रतिशत से जुड़ा हुआ है। नवीनतम व्यवस्था के अनुसार यह मूल्य लगभग 1,478 रुपए प्रति एमएमबीटीयू बैठता है।



संशोधित गोबरधन ढांचे के तहत सीबीजी की खरीद कीमत 2,110 रुपए प्रति एमएमबीटीयू निर्धारित की गई है। यह मौजूदा कीमत की तुलना में लगभग 43 प्रतिशत अधिक है। हालांकि मंत्रालय ने जोर देकर कहा कि यह कीमत केवल उत्पादकों को दी जाने वाली खरीद कीमत है और यही राशि सीधे सीएनजी या घरेलू पीएनजी उपभोक्ताओं से नहीं वसूली जाती।

सरकार ने यह भी घोषणा की है कि सीबीजी की बढ़ावा देने के लिए 10 रुपए प्रति किलोग्राम की वहनीयता सहायता प्रदान की जाएगी। 95 प्रतिशत मोथेन युक्त सीबीजी के लिए यह सहायता लगभग 215 रुपए प्रति एमएमबीटीयू के बराबर होगी। यह राशि सरकार खुद वहन करेगी, जिससे उपभोक्ताओं पर पड़ने वाला अतिरिक्त भार कम हो जाएगा। मंत्रालय के अनुसार, सरकारी

सहायता को समायोजित करने के बाद गैस उपभोक्ताओं के माध्यम से वसूली जाने वाली प्रभावी सीबीजी लागत लगभग 1,895 रुपए प्रति एमएमबीटीयू होगी। यह मौजूदा 1,478 रुपए प्रति एमएमबीटीयू की प्रभावी लागत की तुलना में लगभग 28 प्रतिशत अधिक है। यानी वास्तविक वृद्धि, खरीद मूल्य में दिख रही 43 प्रतिशत बढ़ोतरी से काफी कम है। सरकार ने आगे स्पष्ट किया कि सीबीजी को सीधे उसकी खरीद कीमत पर सिटी गैस वितरण (सीजीडी) कंपनियों को नहीं बेचा जाता। इसके बजाय इसे अन्य घरेलू प्राकृतिक गैस के साथ मिलाकर एक साझा गैस पूल में शामिल किया जाता है और लागत का वितरण पूरे घरेलू गैस पूल में किया जाता है। मंत्रालय ने बताया कि पुरानी व्यवस्था में सीबीजी की लागत केवल प्रशासित मूल्य तंत्र (एपीएम) के तहत आवंटित सीमित गैस मात्रा पर वितरित होती थी।

सरकार ने शुरू की केंद्रीय बजट 2027-28 की तैयारियां पूर्व-बजट बैठकें 12 अक्टूबर 2026 से होंगी शुरू

विश्व केसरी■
केंद्र सरकार ने वित्त वर्ष 2027-28 के केंद्रीय बजट की तैयारियां औपचारिक रूप से शुरू कर दी हैं। वित्त मंत्रालय ने बजट प्रक्रिया के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश और समयसीमा तय करते हुए बजट परिपत्र (बजट सर्कुलर) जारी कर दिया है। इसके साथ ही विभिन्न मंत्रालयों और विभागों को आगामी वित्तीय वर्ष के लिए अपने व्यय अनुमान और योजनागत आवश्यकताओं का विस्तृत ब्योरा तैयार करने के निर्देश दिए गए हैं।

वित्त मंत्रालय ने कहा है कि पूर्व-बजट परामर्श बैठकें 12 अक्टूबर 2026 से शुरू होंगी। इसके लिए मंत्रालयों और विभागों को लेकर होने वाली पूर्व-बजट चर्चाओं में इनका उपयोग किया जा सके। इन बैठकों में विभिन्न मंत्रालयों की वित्तीय जरूरतों, चल रही परियोजनाओं और भविष्य की प्राथमिकताओं पर विचार किया जाएगा, जिसके आधार पर आगामी बजट का ढांचा तैयार किया जाएगा। सरकार का आगामी बजट प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ‘विकसित भारत @2047’ विजन के अनुरूप तैयार होने की संभावना है। बजट परिपत्र में स्पष्ट किया गया है कि मंत्रालयों द्वारा भेजे जाने वाले व्यय प्रस्ताव सरकार की स्वीकृत प्राथमिकताओं और वास्तविक वित्तीय आवश्यकताओं के अनुरूप होने चाहिए। सरकार का



वित्त वर्ष 2027-28 के बजट अनुमान तैयार करने होंगे। इसके लिए सभी विभागों से विस्तृत व्यय प्रस्ताव और वित्तीय जरूरतों का आकलन मांगा गया है, ताकि आगामी बजट होने की संभावना है। बजट परिपत्र में स्पष्ट किया गया है कि मंत्रालयों द्वारा भेजे जाने वाले व्यय प्रस्ताव सरकार की स्वीकृत प्राथमिकताओं और वास्तविक वित्तीय आवश्यकताओं के अनुरूप होने चाहिए। सरकार का

लक्ष्य ऐसे व्यय प्रस्तावों को प्राथमिकता देना है जो देश के दीर्घकालिक आर्थिक विकास, बुनियादी ढांचे के विस्तार, रोजगार सृजन, डिजिटल परिवर्तन और सामाजिक विकास के लक्ष्यों को आगे बढ़ाने में सहायक हों।

वित्त मंत्रालय के आर्थिक कार्य विभाग ने मंत्रालयों और विभागों को निर्देश दिया है कि वे बजट अनुमान तैयार करते समय यथासंभव सटीक और यथार्थवादी वित्तीय आकलन प्रस्तुत करें। मंत्रालय ने यह भी कहा है कि वित्तीय वर्ष के दौरान अतिरिक्त संसाधनों की मांग को न्यूनतम रखने का प्रयास किया जाना चाहिए। इससे सार्वजनिक वित्त प्रबंधन को अधिक प्रभावी और अनुशासित बनाए रखने में मदद मिलेगी। बजट परिपत्र में यह भी स्पष्ट किया गया है कि केवल उन्हीं योजनाओं और कार्यक्रमों के लिए बजटीय प्रावधान प्रस्तावित किए जाएं, जिन्हें सक्षम प्राधिकारी की मंजूरी प्राप्त हो।

बाजार की पाटशाला: इन लोगों के लिए 31 अगस्त है आईटीआर फाइल करने की डेडलाइन, जानिए किसके लिए कौन-सा फॉर्म होगा सही

विश्व केसरी■
नई दिल्ली। अगर आप नौकरी के साथ कारोबार, पेशे या स्वतंत्र रूप से काम करके कमाई करते हैं, तो आपको लिए आयकर रिटर्न दाखिल करने की अंतिम तारीख नजदीक आ गई है। बिना कर ऑडिट वाली कारोबारी या पेशेवर आय रखने वाले करदाताओं को 31 अगस्त 2026 तक अपना आयकर रिटर्न दाखिल करना होगा। वहीं, जिन कारोबारियों और पेशेवरों के खातों का कर ऑडिट जरूरी है, उनके लिए रिटर्न दाखिल करने की अंतिम तारीख 31 अक्टूबर 2026 है। ऐसे करदाताओं के लिए रिटर्न दाखिल करने से पहले यह समझना जरूरी है कि उनकी आय और वित्तीय स्थिति के आधार पर कौन-सा रिटर्न फॉर्म लागू होगा।

आयकर विभाग के अनुसार, 31 जुलाई की अंतिम तारीख तक 6.5 करोड़ से अधिक आयकर रिटर्न दाखिल किए जा चुके थे, जिनमें वेतनभोगी लोगों, पेंशनभोगियों, छात्रों की आय वाले करदाताओं और अलग-अलग स्रोतों से आय प्राप्त करने वाले लोगों के रिटर्न शामिल हैं। इनमें कारोबार (बिजनेस) और पेशे (प्रोफेशन) से आय वाले बड़ी संख्या में करदाता भी शामिल रहे। अब बिना कर ऑडिट वाले कारोबार या पेशे से आय रखने वाले बाकी करदाताओं के लिए 31 अगस्त की तारीख महत्वपूर्ण है। बिजनेस या प्रोफेशन से आय होने पर आम तौर पर आईटीआर-



3 या आईटीआर-4 में से किसी एक फॉर्म का इस्तेमाल किया जाता है। सही फॉर्म का चुनाव करदाता की आय, कारोबार की प्रकृति और कर व्यवस्था पर निर्भर करता है। गलत फॉर्म में रिटर्न दाखिल करने से बाद में कर विभाग की ओर से परेशानी या स्पष्टीकरण की जरूरत पड़ सकती है।

आईटीआर-3 उन व्यक्तियों और हिंदू अविभाजित परिवारों (एचयूएफ) के लिए होता है, जिनकी आय बिजनेस या प्रोफेशन से होती है और जो प्रिजम्प्टिव टैक्सेशन यानी अनुमानित कर व्यवस्था का विकल्प नहीं चुनते हैं। अगर टैक्सपेयर नियमित रूप से अकाउंट बुक्स मेंटेन करता है, उसकी कुल आय 50 लाख रुपये से अकाउंट बुक्स मेंटेन करता है, उसकी कुल आय 50 लाख रुपये से अधिक है या वह फ्यूचर्स एंड ऑप्शंस यानी एफएंडओ ट्रेडिंग करता है, तो कई मामलों में आईटीआर-3 लागू हो सकता है।

आईटीआर-3 के जरिए वे टैक्सपेयर्स वेतन या पेंशन, हाउस

प्रॉपर्टी, बिजनेस या प्रोफेशन, कैपिटल गेन्स और अन्य स्रोतों से होने वाली आय की जानकारी दे सकते हैं। आम तौर पर यह फॉर्म उन व्यक्तियों या एचयूएफ के लिए इस्तेमाल होता है, जो आईटीआर-1, आईटीआर-2 या आईटीआर-4 के तहत रिटर्न दाखिल करने के योग्य नहीं हैं। वहीं, आईटीआर-4 यानी सुगम उन व्यक्तियों, एचयूएफ और फर्म के लिए है, जो प्रिजम्प्टिव टैक्सेशन स्कीम तहत बिजनेस या प्रोफेशनल इनकम घोषित करते हैं और जिनकी कुल आय निर्धारित सीमा के भीतर है। सामान्य तौर पर इसमें 50 लाख रुपये तक की कुल आय वाले पात्र टैक्सपेयर्स शामिल हो सकते हैं। इसमें बिजनेस या प्रोफेशन से होने वाली आय के अलावा वेतन या पेंशन, अधिकतम दो हाउस प्रॉपर्टी से आय और ब्याज, फैमिली पेंशन तथा डिविडेंड जैसी अन्य स्रोतों से आय भी शामिल की जा सकती है।

दिल्ली-एनसीआर में सीएनजी की कीमतों में 3.89 रुपये प्रति किलोग्राम की बढ़ोतरी, नई दरें आज से लागू

विश्व केसरी■
नई दिल्ली। दिल्ली-एनसीआर में कंप्रेसड नेचुरल गैस (सीएनजी) की कीमतों में 3.89 रुपये प्रति किलोग्राम की वृद्धि की गई है। संशोधित दरें शनिवार सुबह 6 बजे से प्रभावी हो गई हैं। यह वृद्धि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में प्रमुख शहरी गैस वितरक इंद्रप्रस्थ गैस लिमिटेड (आईजीएल) द्वारा घोषित की गई है।

हालिया बढ़ोतरी के बाद, दिल्ली में सीएनजी की कीमत 83.09 रुपये प्रति किलोग्राम से बढ़कर 86.98 रुपये प्रति किलोग्राम हो गई है। संशोधित दरें नोएडा, ग्रेटर नोएडा, गाजियाबाद और गुरुग्राम सहित कई पड़ोसी शहरों में भी लागू होंगी।

नोएडा और गाजियाबाद में अब सीएनजी की कीमत 95.59 रुपये प्रति किलोग्राम होगी, जबकि गुरुग्राम में नई कीमत 92.01 रुपये



प्रति किलोग्राम तय की गई है। इस नवीनतम वृद्धि से सीएनजी पर अत्यधिक निर्भर वाहन चालकों और वाणिज्यिक वाहन संचालकों पर अतिरिक्त दबाव पड़ने की आशंका है। ऑटो-रिक्शा, टैक्सी, ऐप-आधारित कैब सेवाएं और अन्य

वाणिज्यिक परिवहन संचालकों को इस संशोधन के बाद ईंधन पर अधिक खर्च करना पड़ सकता है। सीएनजी का उपयोग करने वाले निजी कार मालिकों को भी ईंधन पर अधिक खर्च करना पड़ेगा। हाल के महीनों में सीएनजी की कीमतों में लगातार वृद्धि के बाद

यह ताजा बढ़ोतरी हुई है। मई 2026 में, आईजीएल ने दिल्ली में 2 रुपये प्रति किलोग्राम की एक और वृद्धि की घोषणा की थी। यह संशोधन 26 मई से लागू होने वाली 1 रुपये प्रति किलोग्राम की वृद्धि के कुछ ही दिनों बाद किया गया था, क्योंकि सीएनजी की कीमतें लगातार बढ़ रही थीं। सार्वजनिक क्षेत्र की गैस वितरण कंपनी आईजीएल ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय तरलीकृत प्राकृतिक गैस (एलएनजी) की कीमतें ‘काफी अधिक’ बनी हुई हैं और बढ़ती लागत का असर तेजी से महसूस किया जा रहा है। कंपनी ने कहा कि सीएनजी की कीमतों में 3.89 रुपये प्रति किलोग्राम की वृद्धि आवश्यक थी ताकि इनपुट गैस की लागत में वृद्धि की आंशिक रूप से भरपाई की जा सके और उपभोक्ताओं को सीएनजी की निरंतर और विश्वसनीय आपूर्ति सुनिश्चित की जा सके।

महाराष्ट्र में दूध हुआ महंगा, 9 रुपये प्रति लीटर बढ़े दाम

विश्व केसरी■
मुंबई। महाराष्ट्र में दूध की कीमतों में बढ़ोतरी कर दी गई है। 1 सितंबर से लेकर 28 फरवरी तक बढ़े हुए रेट पर दूध बेचा जाएगा। राज्य में पहले 93 रुपये लीटर दूध बिक रहा था अब यह बढ़कर 102 रुपये पर पहुंच गया है।

महाराष्ट्र में दूध की कीमत में भारी बढ़ोतरी की गई है। बॉम्बे मिल्क प्रोड्यूसर्स एसोसिएशन ने थोक दूध की कीमत 93 रुपये प्रति लीटर से बढ़ाकर 102 रुपये प्रति लीटर कर दी है। यह नई दर 1 सितंबर, 2026 से 28 फरवरी, 2027 तक प्रभावी रहेगी। दूध के दामों में लगभग 9 रुपये लीटर की बढ़ोतरी की गई है।

बढ़े हुए दामों से आम आदमी की जेब पर भारी खर्च बढ़ने जा रहा है। मुंबई मिल्क प्रोड्यूसर्स एसोसिएशन ने जानकारी के चारे डिविडेंड जैसी अन्य स्रोतों से आय भी शामिल की जा सकती है।



कर दी गई है। मुंबई मिल्क प्रोड्यूसर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष चंद्र कुमार सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि नई कीमतें 1 सितंबर 2026 से लागू कर दी जाएंगी। वहीं यह रेट 28 फरवरी 2027 तक रहेंगे। मुंबई मिल्क प्रोड्यूसर्स एसोसिएशन ने इस फैसले को जोगेश्वरी में हुई मीटिंग के बाद लिया है। मीटिंग में बताया गया कि डेयरी जानवरों की बढ़ती कीमत, उनका चारा चन्ना चुन्नी, अनाज की कीमतों में 25 फीसदी की बढ़ोतरी

हो गई है। दूध प्रोड्यूसर्स को चारे और खली की कीमत बढ़ने से भारी बोझ झेलना पड़ रहा है। मुंबई मिल्क प्रोड्यूसर्स एसोसिएशन ने दूध के दामों में बढ़ोतरी का ऐलान किया है। पहले दूध की कीमत 93 रुपये प्रति लीटर थी जो 9 रुपये बढ़कर अब 102 रुपये पर पहुंच गई है। मिल्क प्रोड्यूसर्स एसोसिएशन का कहना है कि यह फैसला दूध प्रोड्यूस करने वाले प्रोड्यूसर्स को बढ़ती कॉस्ट से राहत देने के लिए लिया गया है।

बता दें कि मई 2026 से लेकर अगस्त 2026 तक दूध के दाम कई बार बढ़ चुके हैं। फिलहाल आम आदमी की जेब पर भारी खर्च पड़ेगा और इससे अभी कोई राहत मिलने की उम्मीद नहीं है। दूध के दाम बढ़ाने का फैसला सिर्फ दूध प्रोड्यूसर्स एसोसिएशन का है। फियाज उल मुस्तफा उत्तर प्रदेश के रामपुर से ताल्लुक रखते हैं। उन्होंने जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली से पीजी टीवी जर्नलिज्म किया है, जबकि रोहितलखंड विश्वविद्यालय, बरेली से राजनीति विज्ञान में स्नातक की डिग्री प्राप्त की है। फियाज उल मुस्तफा को राजनीतिक और एंटरटेनमेंट बोट्स पर काम करने का अनुभव है। वर्तमान में वे एबीपी न्यूज की डिजिटल टीम का हिस्सा हैं, जहां वे देश के विभिन्न राज्यों से जुड़ी अपराध और राजनीतिक खबरें लिखते और एडिट करते हैं। इस दौरान उन्हें रिपोर्टिंग, कॉपी एडिटिंग और न्यूज़रूम ऑपरेशंस का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हो रहा है।

क्या पपीते के पत्ते से सच में बढ़ते हैं प्लेटलेट्स? जानें डेंगू डाइट से जुड़े मिथ और सही न्यूट्रिशन गाइड



डेंगू सीजन में प्लेटलेट्स बढ़ाने के लिए पपीते के पत्ते का रस, कीवी और बकरी के दूध जैसे सुखों की सच्चाई जानें। असल में कोई भी खाना रातों-रात प्लेटलेट्स नहीं बढ़ा सकता; प्लेटलेट्स संक्रमण ठीक होने के साथ अपने आप बढ़ते हैं। सही डाइट का काम शरीर को हाइड्रेटेड रखना और ताकत देना है। जानें डेंगू रिकवरी के लिए जरूरी न्यूट्रिशन, क्या खाएं, किन चीजों से बचें और कब तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें।

डेंगू सीजन आते ही हर घर और इंटरनेट पर एक ही सवाल सबसे ज्यादा गुंजने लगता

है ‘ऐसा क्या खाएं जिससे प्लेटलेट्स रातों-रात बढ़ जाएं?’ कोई पपीते के पत्तों का रस पीने की सलाह देता है, तो कोई कीवी और बकरी का दूध ढूंढने में लग जाता है। लेकिन क्या सच में कोई सुपरफूड प्लेटलेट्स को जादू की तरह बढ़ा सकता है? आइए आसान भाषा में समझते हैं डेंगू डाइट से जुड़ी 5 सबसे बड़ी सच्चाइयां और घरेलू नुस्खों का साइंटिफिक सच.

सबसे बड़ा सच: कोई भी खाना रातों-रात प्लेटलेट्स नहीं बढ़ा सकता दुनिया में ऐसा कोई भी फल या जूस नहीं

है जो रातों-रात प्लेटलेट्स को नाटकीय रूप से बढ़ा दे. डेंगू में प्लेटलेट्स का गिरना वायरस के प्रभाव के कारण होता है. जैसे-जैसे संक्रमण खत्म होता है और शरीर की बोन मैरो (अस्थि मज्जा) सामान्य स्थिति में लौटती है, प्लेटलेट्स अपने आप ठीक होने लगते हैं. सही खान-पान का असली काम शरीर को हाइड्रेटेड और पोषित रखना है ताकि रिकवरी तेजी से हो सके.

तरल पदार्थ (Fluids): पानी और ORS घोल सबसे जरूरी हैं. नारियल पानी, छाछ, साफ़ सूप और ताजा फलों के रस (जैसे

अनार व आंवला) शरीर में इलेक्ट्रोलाइट्स की कमी नहीं होने देते.

विटामिन B और आयरन: नींबू, आंवला, अमरूद, पालक और चुकंदर इम्युनिटी मजबूत करने और खून में पोषक तत्व बढ़ाने में मदद करते हैं.

प्रोटीन और हल्के कार्ब्स: दालें, उबला अंडा, खिचड़ी, दलिया और चावल इम्युनिटी मजबूत करने और खून में पोषक तत्व बढ़ाने में मदद करते हैं.

पपीते के पत्ते, कीवी और बकरी के दूध के दारों में कितनी सच्चाई है?

पपीते के पत्ते का रस: विवेकानंद अस्पताल, हैदराबाद के डॉक्टर के अनुसार भारत में यह सबसे पॉपुलर नुस्खा है. कुछ छोटे अध्ययनों से पता चलता है कि यह प्लेटलेट्स की रिकवरी की गति को थोड़ा सहारा दे सकता है, लेकिन यह डेंगू का इलाज या कोई जादुई दवाई बिल्कुल नहीं है. इसे केवल एक सपोर्टिव विकल्प की तरह देखें.

कीवी और बकरी का दूध: ये फल व दूध शरीर को न्यूट्रिशन और एनर्जी तो देते हैं, लेकिन इनमें सीधे तौर पर प्लेटलेट्स बढ़ाने का कोई चमत्कारी मेडिकल प्रमाण नहीं है. डेंगू के मरीज भूलकर भी न खाएं ये चीजें-

-बीमारी के दौरान पाचन तंत्र कमजोर हो जाता है. ऐसे में कुछ चीजें स्थिति को और बिगाड़ सकती हैं:

-अधिक तेल-मसाले वाला और तला-भुना खाना.

-कैफ़ीन वाले पेय जैसे चाय, कॉफी और कोला ये शरीर में पानी की कमी यानी डिहाइड्रेशन बढ़ाते हैं।

बारिश में पकौड़े छोड़ बनाएं क्रिस्पी कॉर्न कचौड़ी, भुट्टे की मसालेदार फिलिंग से मिलेगा चटपटा स्वाद, जानिए आसान रेसिपी



बारिश की शाम में चाय के साथ कुछ नया खाना चाहते हैं तो क्रिस्पी कॉर्न कचौड़ी बना सकते हैं. इसकी बाहरी परत मैदा और घी से तैयार होती है, जबकि अंदर मसालेदार भुट्टे की फिलिंग भरी जाती है. कॉर्न को दरदरा पीसकर बेसन, हरी मिर्च, अदरक और रोजमरा के मसालों के साथ भुनने से स्वाद बढ़ जाता है. कचौड़ी को फटने से बचाने के लिए फिलिंग की नमी अच्छी तरह सुखाना जरूरी है. इसे धीमी से मध्यम आंच पर तलने से बाहरी परत सुनहरी और कुरकुरी बनती है. गरमागरम कॉर्न कचौड़ी को हरी चटनी, इमली की चटनी और अदरक वाली चाय के साथ सर्व कर सकते हैं.

बारिश शुरू होते ही शाम की चाय के साथ कुछ गरमागरम और कुरकुरा खाने का मन अपने आप

होने लगता है. ऐसे में अगर पकौड़े और आलू की कचौड़ी से हटकर कुछ नया ट्राई करना चाहते हैं, तो इस बार भुट्टे से बनने वाली क्रिस्पी कॉर्न कचौड़ी जरूर बनाकर देखें. बाहर से सुनहरी और कुरकुरी, जबकि अंदर से मसालेदार कॉर्न की भरावन इसका स्वाद खास बना देती है. भुट्टा बारिश के मौसम में लगभग हर जगह आसानी से मिल जाता है. आमतौर पर इसे भूनकर, उबालकर या मसाला लगाकर खाया जाता है, लेकिन इससे बनी कचौड़ी शाम के नाश्ते का मजा बदल सकती है.

खास बात यह है कि इसे बनाने के लिए किसी खास सामग्री की जरूरत नहीं पड़ती. घर में रखे मैदा, बेसन और रोजमरा के मसालों से इसकी स्वादिष्ट फिलिंग तैयार होती है. बस थोड़ी सी सावधानी

रखें कि भरावन में नमी न रहे, वरना कचौड़ी तलते समय फट सकती है. **भुट्टे की कचौड़ी के लिए सामग्री**

बाहरी परत के लिए
कचौड़ी की बाहरी परत बनाने के लिए 2 कप मैदा, 2 से 3 बड़े चम्मच देसी घी और स्वादानुसार नमक लें. आटा गुंथने के लिए जरूरत के हिसाब से पानी रखें. घी का सही मोयन कचौड़ी को कुरकुरा बनाने में अहम भूमिका निभाता है. कॉर्न की मसालेदार फिलिंग
भरावन के लिए करीब ढेढ़ कप भुट्टे के दाने, 2 बड़े चम्मच बेसन, 1 से 2 हरी मिर्च, अदरक का छोटा टुकड़ा, 1 छोटा चम्मच जीरा, एक चुटकी हींग, आधा छोटा चम्मच लाल मिर्च पाउडर, चौथाई छोटा चम्मच हल्दी, आधा छोटा चम्मच अमचूर और स्वादानुसार नमक लें. कचौड़ी तलने के लिए तेल भी तैयार रखें.

कैसे बनाएं क्रिस्पी कॉर्न कचौड़ी?
सबसे पहले भुट्टे के दाने अलग कर लें. इन्हें हरी मिर्च और अदरक के साथ मिक्सर में दरदरा पीस लें. यहां एक छोटी सी गलती स्वाद बिगाड़ सकती है, इसलिए कॉर्न को बिल्कुल पेस्ट जैसा न पीसें. हल्के दरदरे दाने कचौड़ी की फिलिंग को अच्छे टेक्सचर देते हैं. अब कड़ाही में थोड़ा तेल गर्म करें. इसमें जीरा और हींग डालकर तड़का लगाएं. इसके बाद पिसा हुआ कॉर्न डालकर मध्यम आंच पर भुनें।

रोटी बेलने में तो हैं माहिर, लेकिन तवे पर जाते ही नहीं फूलती? इन आसान टिप्स से बनेगी फूली रोटी



रोटी भारतीय थाली का अहम हिस्सा है, लेकिन कई बार सही तरीके से बेलने के बावजूद रोटी तवे पर फूल नहीं पाती और सख्त हो जाती है. अगर आपके साथ भी ऐसा होता है तो परेशान होने की जरूरत नहीं है. आटा गुंथने से लेकर उसे सेट करने, रोटी बेलने और तवा गर्म करने तक कुछ आसान बातों का ध्यान रखकर आप हर बार नरम, मुलायम और फूली-फूली रोटी बना सकते हैं.

भारतीय रसोई में रोटी का खास महत्व है, सुबह का नाश्ता हो या रात का खाना, ज्यादातर घरों में रोटी खाने की थाली का जरूरी हिस्सा होती है. कई बार लोग रोटी तो अच्छी तरह बेल लेते हैं, लेकिन सेंकने के बाद वह फूल नहीं पाती. इससे रोटी थोड़ी सख्त भी हो जाती है, अगर आपके साथ भी ऐसा होता है तो कुछ आसान बातों का ध्यान रखकर आप हर बार नरम और फूली हुई रोटी बना सकते हैं.

भारतीय रसोई में रोटी का खास महत्व है, सुबह का नाश्ता हो या रात का खाना, ज्यादातर घरों में रोटी खाने की थाली का जरूरी हिस्सा होती है. कई बार लोग रोटी तो अच्छी तरह बेल लेते हैं, लेकिन सेंकने के बाद वह फूल नहीं पाती. इससे रोटी थोड़ी सख्त भी हो जाती है, अगर आपके साथ भी ऐसा होता है तो कुछ आसान बातों का ध्यान रखकर आप हर बार नरम और फूली हुई रोटी बना सकते हैं.

आटा गुंथने के बाद तुरंत रोटी बनाने के बजाय उसे करीब 20 से 30 मिनट तक ढक्कर रख दें. इससे आटा अच्छी तरह सेट हो जाता है और रोटी बेलने में आसानी होती है, इससे रोटी भी नरम बनती है।

दवाओं के अलावा भी है उपाय, खांसी में राहत दे सकता है यह योगाभ्यास

खांसी मौसम बदलने पर होने वाली बहुत ही कॉमन हेल्थ प्रॉब्लम है. हालांकि कुछ दिनों में अपने आप खांसी ठीक हो जाती है, लेकिन यदि आप इससे लंबे समय से परेशान हैं, और सभी घरेलू उपायों को करके थक गए हैं, तो अलोम-विलोम करना काफी मददगार साबित हो सकते हैं.

मौसम में बदलाव के साथ सर्दी, खांसी और वायरल इंफेक्शन जैसी समस्याएं बढ़ना आम बात है. ऐसे समय में लोग अक्सर दवाओं और घरेलू नुस्खों का सहारा लेते हैं. हालांकि, स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मानना है कि कुछ सरल योग और प्राणायाम तकनीकें भी शरीर को स्वस्थ रखने में अहम भूमिका निभा सकती हैं. इन्हें में से एक है अनुलोम-विलोम प्राणायाम.

यह केवल श्वसन तंत्र को बेहतर बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य पर भी सकारात्मक प्रभाव डाल सकता है. आज की व्यस्त जीवनशैली में तनाव, चिंता और एकाग्रता की कमी जैसी समस्याएं तेजी से बढ़ रही हैं. ऐसे में नियमित रूप से कुछ मिनट अनुलोम-विलोम का अभ्यास करने से शरीर और मन दोनों को लाभ मिल सकता है. आयुष मंत्रालय भी समय-समय पर लोगों को योग और प्राणायाम को दिनचर्या में शामिल करने की सलाह देता है. खासकर बदलते मौसम में यह अभ्यास स्वास्थ्य



को बेहतर बनाए रखने का एक आसान और प्राकृतिक तरीका हो सकता है.

अनुलोम-विलोम प्राणायाम के फायदे

आयुष मंत्रालय के अनुसार, अनुलोम-विलोम प्राणायाम श्वसन तंत्र को बेहतर बनाने में मदद कर सकता है. नियमित अभ्यास से सांस लेने की प्रक्रिया संतुलित होती है, जिससे खांसी और सांस से जुड़ी कुछ सामान्य परेशानियों में राहत मिल सकती है. इस दौरान धीरे-धीरे और गहरी सांस लेना महत्वपूर्ण माना जाता है.

अनुलोम-विलोम का सबसे बड़ा

फायदा यह है कि यह मन को शांत करने में मदद कर सकता है. नियमित अभ्यास से मानसिक तनाव कम हो सकता है और चिंता की भावना पर नियंत्रण पाने में सहायता मिल सकती है. इसके साथ ही यह एकाग्रता बढ़ाने और मानसिक ऊर्जा को बेहतर बनाने में भी उपयोगी माना जाता है.

कैसे करें अनुलोम-विलोम ?

इस प्राणायाम को करने के लिए आरामदायक स्थिति में बैठें. एक नथुने को बंद करके दूसरे नथुने से धीरे-धीरे सांस लें. फिर दूसरे नथुने से सांस छोड़ें और यही प्रक्रिया बारी-बारी से दोहराएं. अभ्यास के दौरान सांसों की

गति धीमी और नियंत्रित रखने की कोशिश करें.

इन संकेतों को न करें नजरअंदाज

आयुष मंत्रालय ने यह भी सलाह दी है कि मौसम बदलने पर स्वास्थ्य संबंधी गंभीर संकेतों को हल्के में नहीं लेना चाहिए. यदि तेज बुखार, सांस लेने में कठिनाई, लगातार उट्टी, अत्यधिक कमजोरी या शरीर में पानी की कमी जैसे लक्षण दिखाई दें, तो तुरंत डॉक्टर से संपर्क करना चाहिए. स्वस्थ जीवनशैली भी है जरूरी मंत्रालय के अनुसार, केवल योग ही नहीं बल्कि संतुलित जीवनशैली भी अच्छे स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है।

अपनी वैल्यूज के साथ रिश्ता चुनने का नया दौर, क्यों पॉपुलर हो रहा है यह माइंडसेट?



डेटिंग ऐप्स पर लगातार नए लोगों की प्रोफाइल देखना और स्वाइप करना एक कई लोगों को थका रहा है. ऐसे में रिश्तों को लेकर एक नई सोच सामने आ रही है, जिसमें सिर्फ आकर्षण या ज्यादा विकल्पों के बजाय सोच, पसंद, जीवन-मूल्य और भविष्य की प्राथमिकताओं को महत्व दिया जा रहा है. इसी सोच को Intentional Love कहा जा रहा है. जानिए क्या है यह नया रिलेशनशिप ट्रेंड, क्यों युवा अब साफ इरादे और बेहतर जुड़ाव को प्राथमिकता दे रहे हैं और क्या यह सोच सिर्फ डेटिंग ऐप्स तक सीमित है या आम रिश्तों में भी इसकी जगह बन रही है.

एक समय था जब प्यार में सामने वाले को पसंद करना, अच्छी बातचीत और थोड़ी-सी केमिस्ट्री ही काफी मानी जाती थी. लेकिन आज रिश्तों को लेकर लोगों की सोच बदल रही है. खासकर युवा अब सिर्फ इस आधार पर रिश्ता आगे नहीं बढ़ाना चाहते कि सामने वाला उन्हें पसंद है. वे यह भी समझना चाहते हैं कि क्या दोनों की सोच, प्राथमिकताएं और भविष्य को लेकर नजरिया एक-दूसरे से मेल खाता है. इसी बदलती सोच को इंटेंशनल लव कहा जा रहा है. आसान भाषा में इसका मतलब है- सोच-समझकर, अपनी जरूरतों और मूल्यों को ध्यान में रखकर रिश्ता चुनना और उसे ईमानदारी से आगे बढ़ाना.

क्या है इंटेंशनल लव ?
डेटिंग लव सिर्फ डेटिंग ऐप पर किसी प्रोफाइल को सोच-समझकर चुनने तक सीमित नहीं है. इसका मतलब है कि व्यक्ति रिश्ते में अपनी प्राथमिकताओं को समझे और सामने वाले से भी अपनी उम्मीदों को लेकर साफ रहे. मसलन, कोई गंभीर रिश्ता चाहता है ।

सहारनपुर के बादशाही बाग में घूमने की वो 5 जगहें, जहां मुफ्त में कर सकते हैं सैर, दूर-दूर से आते हैं पर्यटक

सहारनपुर के कई क्षेत्र घूमने, पिकनिक मनाने के लिए काफी फेमस हैं. लेकिन आज हम जिस क्षेत्र की बात करने जा रहे हैं वह सहारनपुर का सबसे खूबसूरत कहा जाने वाला क्षेत्र है, जिसका नाम है बादशाह बाग. यहां पर घूमने, पिकनिक बनाने और प्रकृति का आनंद उठाने के लिए लोग दूर-दूर से आते हैं. सहारनपुर के कई क्षेत्र घूमने, पिकनिक मनाने के लिए काफी फेमस हैं. लेकिन आज हम जिस क्षेत्र की बात करने जा रहे हैं वह सहारनपुर का सबसे खूबसूरत कहा जाने वाला क्षेत्र है, जिसका नाम है बादशाह बाग. यहां पर घूमने, पिकनिक बनाने और प्रकृति का आनंद उठाने के लिए लोग दूर-दूर से आते हैं. चलिए आज हम आपको दिखाते हैं यहां पर आपको क्या कुछ मिलने वाला है वह भी पूरे तरीके से निशुल्क.

सबसे पहले बात आती है बादशाही बाग क्षेत्र में बादशाही महल की, जिसके नाम पर इस क्षेत्र का नाम पड़ा है. बताया जाता है कि इस महल को शाहजहां ने अपनी बेगम के लिए बनवाया था और साथ ही वह यहां पर शिकार करने के बाद आराम भी फरमाया करते थे, इसलिए इसको शिकार गाह भी कहा जाता है.



लेकिन आज यह महल केवल एक खंडहर बनकर रह गया है. अक्सर लोग यहां पर पिकनिक मनाने जरूर आते हैं. बादशाही बाग क्षेत्र में बना यह सैकड़ों साल पुराना महल जो खंडहर में तब्दील हो चुका है और इसके चारों ओर चार राज्यों की सीमा लगती है. इसमें

हरियाणा, हिमाचल, उत्तराखंड और यूपी भी शामिल है. चार राज्यों की सीमा से घिरा यह खूबसूरत स्थान अक्षर पर्यटकों के लिए बेहतर स्थान में से एक है. यहां कंक्रीट का बांचा (बैराज) है, जो सिंचाई, की टंडक और शांति का एहसास होता है. अब बात आती है बादशाही बाग क्षेत्र

में पड़ने वाले हथिनी कुंड बैराज की. हथिनी कुंड बैराज हरियाणा के यमुनानगर और यूपी के सहारनपुर जिले में यमुना नदी पर स्थित एक बेहद महत्वपूर्ण कंक्रीट का बांचा (बैराज) है, जो सिंचाई, बाढ़ नियंत्रण और पेयजल आपूर्ति में अहम भूमिका निभाता है. यह बैराज 5

राज्यों (हरियाणा, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, राजस्थान और हिमाचल प्रदेश) की एक संयुक्त परियोजना है. अक्सर बरसात के मौसम में लोग यहां पर ज्यादा घूमने आते हैं, क्योंकि हथिनी कुंड बैराज में पानी का जल स्रोत काफी बढ़ जाता है, जो बेहद खूबसूरत दृश्य में तब्दील हो जाता है. यहां से यमुना नदी में पानी छोड़ा जाता है और यमुना नदी से छोटी-छोटी नदियों में उस पानी को बांट दिया जाता है. अक्सर लोग यहां पर खूबसूरत झरनों का आनंद उठाने और फोटोशूट करने के लिए ज्यादा आते हैं. जबकि इन दिनों यह क्षेत्र पर्यटकों के लिए काफी फेमस भी हो रहा है.

बादशाही के जंगलों में बनी 9 गजापीर की मंजार भी लोगों को तेजी से अपनी ओर आकर्षित करती है, क्योंकि यह घने जंगलों के बीच एक नदी के तट पर बनी है. अक्षर लोग यहां पर अपनी मनननों को लेकर आते हैं और प्रकृति और खूबसूरती का आनंद भी उठाते हैं. बरसाती नदी के बीच बना यह खूबसूरत स्थान जहां से पहाड़ों के बीच आनंद लेने के लिए लोग अक्सर आते हैं. यहां पर छोटे-छोटे वन गुर्जरों के आवास भी बने हुए हैं. यहां पर उनके साथ पुरानी यादों

को याद करने और खूबसूरत पलों को बिताने का भी मौका मिलता है. वही इन जंगलों के बीच में बना पातालेश्वर महादेव मंदिर लाखों श्रद्धालुओं की आस्था का केंद्र है, जो घने जंगलों के बीच सैकड़ों साल पुराना है. यहां पर मान्यता है कि जो लोग अपनी मनोकामनाओं को लेकर आते हैं, उनकी

मनोकामनाएं पूर्ण होती है. खासकर जिन लोगों के संतान नहीं होती, वह लोग यहां पर ज्यादा आते हैं. यहां इस मंदिर में दर्शन करने के साथ श्रद्धालुओं को प्रकृति का आनंद उठाने का मौका भी मिलता है और पास ही से गुजर रही खूबसूरत नदी और छोटे-छोटे झरनों की खूबसूरती देखने का अवसर प्राप्त होता है।

मनोकामनाएं पूर्ण होती है. खासकर जिन लोगों के संतान नहीं होती, वह लोग यहां पर ज्यादा आते हैं. यहां इस मंदिर में दर्शन करने के साथ श्रद्धालुओं को प्रकृति का आनंद उठाने का मौका भी मिलता है और पास ही से गुजर रही खूबसूरत नदी और छोटे-छोटे झरनों की खूबसूरती देखने का अवसर प्राप्त होता है।



मानसी पारेख ने पूरी की कैलाश यात्रा, बोलीं- जिंदगी भर याद रहेगा ये सफर

मुंबई | अभिनेत्री मानसी पारेख ने हाल ही में कैलाश की आध्यात्मिक यात्रा पूरी की है। शनिवार को उन्होंने अपनी इसी यात्रा की झलक शेयर की। साथ ही, उन्होंने बताया कि यह उनके अब तक के सबसे खास अनुभवों में से फर है।

■ अभिनेत्री ने इंस्टाग्राम पर अपनी यात्रा की झलक शेयर की, जिससे उन्होंने ऊंचाई पर 20 किमी पैदल चलने, बारिश का सामना करने और आखिर में घोड़े पर सवार होकर आखिरी हिस्से तक जाने को याद किया।

■ मानसी पारेख कहती हैं, 'इस ठंड के मौसम में, बिना अलर्म के, मैं सुबह 5 बजे उठी क्योंकि मैं बहुत उत्साहित थी। हाई एल्टीट्यूड पर नाक में कैस्टर ऑयल लगाना बहुत जरूरी है, नहीं तो नाक से खून निकलने लगता है। पहाड़ों में कोई मेकअप काम नहीं करता; सिर्फ एक चीज मायने रखती है, वो है ढेर सारा सनब्लॉक।'

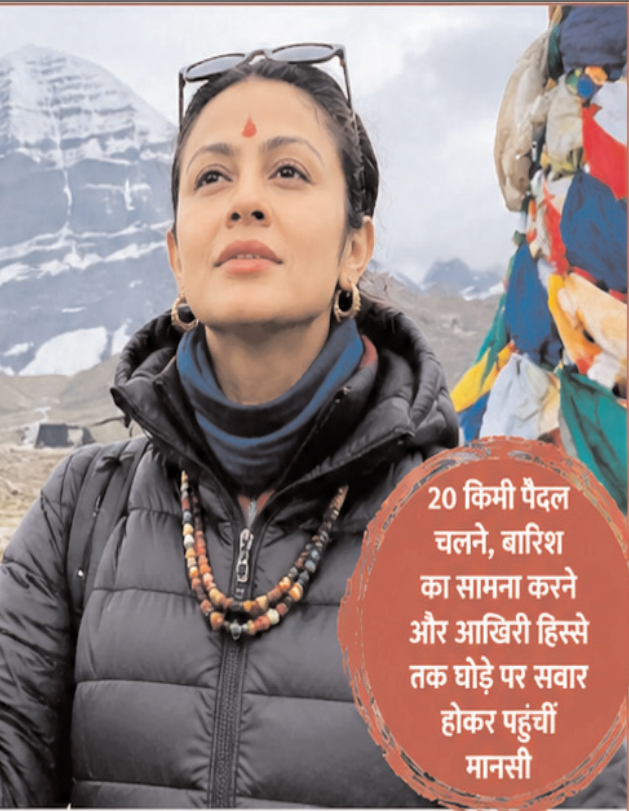
■ उन्होंने बताया कि उन्होंने अपना नाश्ता हैवी किया है, क्योंकि पहाड़ों में चढ़ने के साथ-साथ अपना बैकपैक भी उठाना पड़ता है। उन्होंने कहा, 'नाश्ते के बाद हम बस की तरफ निकल पड़े और अचानक, हमने देखा कि मौसम बहुत खराब है। ऐसा लग रहा है कि बारिश होने वाली है।'

“ हम यमद्वारा से अपनी यात्रा शुरू करते हैं। इसका सांकेतिक मतलब है कि आप अपनी सारी शिकायतों और परेशानियों को, सब कुछ भूल जाते हैं और अपने नए आध्यात्मिक स्वरूप की ओर चलते हैं। इस साल तिब्बती कैलेंडर के अनुसार घोड़े का वर्ष है, जिसका मतलब है कि इस साल कैलाश यात्रा करना 13 बार यात्रा करने के बराबर है।

— मानसी पारेख

उन्होंने आगे कहा, 'घोड़े का वर्ष समर्पण, परिवर्तन और विलय के बारे में है और मुझे लगता है कि ये यात्रा निश्चित रूप से मेरे लिए यही है और इससे भी कहीं ज्यादा। जैसा कि आप देख सकते हैं, जैसे-जैसे हम ऊंचाई की ओर बढ़ रहे हैं, खूबसूरत नजारे भी बढ़ते जा रहे हैं।'

अभिनेत्री ने बताया कि वे घर से अपनी मम्मी के पैक किए हुए ड्राई फ्रूट्स जैसे खिच स्नैक भी ले गई थी। उन्होंने कहा, 'पहाड़ों के खूबसूरत नजारों को देखकर मैं बहुत खुश हूं और अचानक से उस दौरान कैलाश का पूर्वी छोर दिखा, जो और भी खूबसूरत था। पूर्वी छोर को देखने के बाद मुझे शांति महसूस हुई सब कुछ सार्थक लगा। इसीलिए मैंने घोड़े पर बैठकर आखिरी 1 किमी अपने शेरपा के साथ पूरा करने का फैसला किया।'



20 किमी पैदल चलने, बारिश का सामना करने और आखिरी हिस्से तक घोड़े पर सवार होकर पहुंची मानसी



“ कैलाश यात्रा मेरे लिए सबसे खास अनुभवों में से एक है।

तिब्बती संस्कृति के अनुसार 'घोड़े के साल' में कैलाश की यात्रा करना 13 बार यात्रा करने के बराबर है! क्या खास साल है और क्या खास सफर है जो हमेशा के लिए मेरे दिल में बस गया है। " — मानसी पारेख



बिग बॉस में एंट्री पर बोलीं रिया अहीर, शो में जाने के बाद लोगों को पता चलेगा मैं कैसी हूँ

विश्व केसरी ■ मुंबई। सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर और मॉडल रिया अहीर 'बिग बॉस-20' में नजर आ सकती हैं। शो में उनकी एंट्री पूरी तरह से दर्शकों के वोट पर आधारित है, जिसे लेकर रिया का कहना है कि वे उनके लिए एक तरह से इम्तिहान की तरह है।

रिया अहीर का मानना है कि बिग बॉस जाने के बाद लोग अच्छी तरह से समझ सकेंगे कि वे किस तरह के इंसान हैं।

उन्होंने कहा, 'जब मेरे पास बिग बॉस की खबर आई थी, तो बहुत लोगों ने मुझे ट्रोल् करना शुरू कर दिया था। वे कहने लगे थे कि मुझ पर फेम का अवर चढ़ गया है, जिस वजह से मैंने वोटिंग का सहारा लेने का फैसला लिया।

उन्होंने बताया कि काफी लोगों ने मुझसे पूछा था कि बिग बॉस क्यों? मेरे बारे में अलग-अलग बातें हो रही थीं। उन्होंने कहा, 'शुरुआत में मैं भी सोचती थी कि बिग बॉस क्यों जाना है। फिर घर में पापा से बात हुई और उन्होंने मुझसे जो



कहा वह बात मेरे दिल में गई थी। उन्होंने मुझसे कहा था कि तुम इस बात पर कैसे रिएक्ट करती हो ये पूरा तुम पर निर्भर करता है। मैं तुम्हें खुद को फिर से लॉन्च करने या फिर कुछ भी करने के लिए कोई मजबूर नहीं कर रहा हूँ। यह बात

मेरे मन में बैठ गई थी। मुझे लगा कि लोगों को यह जानने का अच्छा मौका होगा कि मैं किस तरह की इंसान हूँ। लोग कह रहे थे कि उन्हें समझ नहीं आ रहा कि क्या हो रहा है, तो मैं चाहती हूँ कि वे मुझे वैसे देखें जैसी मैं सच में हूँ।

मेरी या किसी और की मत सुनो, खुद फैसला करो।'

दरअसल, रिया अहीर नीट पेपर लीक और परीक्षा व्यवस्था के खिलाफ हुए छात्र विरोध प्रदर्शन के दौरान मुंबई पुलिस की वैन के सामने अकेले खड़े होने के कारण सोशल मीडिया पर चर्चा में आई और रातों-रात वायरल हो गई थी।

मीडिया ने रिया से इस वायरल वीडियो के रिएक्शन के बारे में पूछा। साथ ही यह भी कहा कि क्या आपको उम्मीद थी कि लोगों की तरफ से इस तरह का प्यार मिलेगा।

इस पर रिया ने कहा, 'नहीं, मुझे बिल्कुल भी उम्मीद नहीं थी कि लोगों को इस तरह से प्यार मिलेगा। उस समय मेरा एक्शन बिल्कुल नेचुरल और नॉर्मल था। एक महीने बाद भी, जब मैं उसे देखती हूँ, तो मुझे वैसा ही लगता है।'

रिया अहीर ने स्पष्ट किया कि वे बिग बॉस उस एक्शन की वजह से नहीं बल्कि, लोगों की तरफ से मिले प्यार और सपोर्ट की वजह से जा रही हूँ।

भावना पानी ने संजय लीला भंसाली के साथ काम करने की इच्छा जताई, कहा- उनके जैसा कोई नहीं



विश्व केसरी ■ मुंबई। अभिनेत्री भावना पानी फिल्मों और रंगमंच में ख़ास पहचान रखती हैं। उन्होंने आईएनएस के साथ हालिया बातचीत में बताया कि वे अपने करियर में एक बार संजय लीला भंसाली की फिल्मों में काम करना चाहती हैं।

उन्होंने बताया, 'संजय लीला भंसाली सर, चाहे मुझे कोई भी रोल दें, उसे आगे ले जाना मेरे ऊपर है। मैं उम्मीद करती हूँ कि जब भी मुझे उनकी फिल्म में काम करने का मौका मिलेगा, तो वह शानदार, दमदार और चुनौतीपूर्ण रोल होगा। मैं यह भी उम्मीद करती हूँ कि वह डांस वाला हो क्योंकि मैंने बचपन से ही भारतीय शास्त्रीय नृत्य सीखा है। मुझे लगता है कि संजय लीला भंसाली सर को शास्त्रीय संगीत और

नृत्य को अच्छी समझ भी है। अभिनेत्री का मानना है कि हिंदी फिल्मों में अगर किसी निर्देशक ने भारतीय शास्त्रीय नृत्य और म्यूजिक को बड़े कैमवास पर उतारा है, तो वे संजय लीला भंसाली सर हैं।

अभिनेत्री से आईएनएस ने सवाल पूछा, 'आपने यह भी कहा है कि अगर आप एक्टर या डांसर नहीं होते, तो आप एस्ट्रोनॉट बनना चाहते। एक्टिंग कल्पना और इमोशन से चलती है, जबकि एस्ट्रोफिजिक्स लॉजिक और साइंस पर आधारित है। ये अलग-अलग दुनियाएं आपकी पर्सनैलिटी में एक साथ कैसे रहती हैं? अभिनेत्री ने जवाब देते हुए कहा, 'इमोशन कभी भी बिना तर्क के नहीं आते हैं। ये आते कहाँ से हैं, उसका मकसद और

जरूरत क्या है? यह सब समझने के लिए बहुत सारे तर्क और विज्ञान की आवश्यकता होती है। इसके लिए आपको बिहेवियरल साइंस की भी जानकारी होनी चाहिए। कई ऐसी चीजें हैं जहाँ आपको दिमाग का तार्किक होना बहुत जरूरी है। मुझे लगता है कि तार्किक दिमाग के साथ-साथ कल्पना और भावना की भी जरूरत होती है।' अभिनेत्री भावना पानी हाल ही में अक्षय कुमार की फिल्म 'भूत बंगला' में नजर आई थीं, जिसमें उन्होंने 'नौकरानी रागिनी' का किरदार निभाया था। अभिनेत्री ने इस फिल्म के लोकप्रिय गाने 'ओ सुंदरी' में अपने डांस से वह काफी चर्चा में आई थीं।

विश्व केसरी ■ नई दिल्ली। हिंदी सिनेमा में कुछ कलाकार ऐसे भी हैं, जिन्होंने अपनी पहली ही फिल्म से लोगों के दिलों में जगह बना ली। चित्रांगदा सिंह भी ऐसी ही अभिनेत्री हैं। पर्दे पर उनकी मौजूदगी जितनी खूबसूरत लगती है, उनके किरदारों में उतनी ही गहराई भी दिखाई देती है। कभी उन्होंने 'हजारों ख्वाहिशें ऐसी' में संवेदनशील और मासूम गीता बनकर दर्शकों का दिल जीता, तो कभी 'बाजार', 'बॉब बिस्वास' और 'गैसलाइट' जैसे प्रोजेक्ट्स में अलग-अलग रंग दिखाए। हाल के वर्षों में 'खाकी: द बंगाल चैप्टर' में एक प्रभावशाली राजनीतिक किरदार निभाकर उन्होंने फिर साबित किया कि वह सिर्फ ग्लैमर तक सीमित अभिनेत्री नहीं हैं।

चित्रांगदा सिंह का जन्म 30 अगस्त 1976 को हुआ था। उनका बचपन मेरठ, कोटा और बरेली जैसे शहरों में बीता। उनके पिता सेना में अधिकारी थे,



इसलिए परिवार को अलग-अलग जगहों पर रहना पड़ा। पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने मॉडलिंग की

दुनिया में कदम रखा। धीरे-धीरे उन्हें विज्ञापनों और म्यूजिक वीडियो में काम मिलने लगा। गुलजार के म्यूजिक वीडियो 'सनसेट प्वाइंट' में नजर आने के बाद उन्होंने लोगों का ध्यान खींचा। इसके बाद उनके लिए फिल्मों का रास्ता खुला। साल 2005 में निर्देशक सुधीर मिश्रा की फिल्म 'हजारों ख्वाहिशें ऐसी' से चित्रांगदा ने बॉलीवुड में कदम रखा। फिल्म में उन्होंने गीता का किरदार निभाया था। कॉलेज की छात्रा और सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में उनका किरदार बेहद संवेदनशील था। चित्रांगदा ने इसे इतनी सहजता से निभाया कि दर्शकों और आलोचकों दोनों ने उनकी तारीफ की। पहली ही फिल्म के लिए उन्हें बेस्ट फीमेल डेब्यू का अवॉर्ड भी मिला। लेकिन बॉलीवुड में पहली फिल्म की सफलता के बाद सब कुछ आसान नहीं रहा। उनकी आगामी फिल्म 'कल: यस्टरडे एंड टुमोरो' उम्मीद के मुताबिक नहीं चली।

अफगानिस्तान पर पकड़ कमजोर पड़ने पर पाकिस्तान ने आतंकी नेटवर्क का सहारा लिया

विश्व केसरी■
वाशिंगटन। अफगानिस्तान पर कूटनीतिक पकड़ कम होते देख पाकिस्तान पुराने ढर्रे पर लौटने की कोशिशों में जुट गया है। मुल्क ने चुनिंदा आतंकवादी समूहों को बर्दाश्त करने की रणनीति तैयार कर ली है। एक रिपोर्ट इसका संकेत देती है। रिपोर्ट के मुताबिक आतंकवादी समूह 'इस्लामिक स्टेट खुरासान प्रोविंस' (आईएसकेपी) का नेटवर्क खैबर पख्तूनख्वा और बलूचिस्तान प्रांतों में अभी भी सक्रिय है। इनमें से कुछ समूह कथित तौर पर पाकिस्तानी सुरक्षा तंत्र के भीतर मौजूद कुछ लोगों के समर्थन या उन्हें 'बर्दाश्त' करने की वजह से बचे हुए हैं।

तालिबान ने पाकिस्तान पर आरोप लगाया है कि वह अपनी जमीन से आईएसकेपी को फलने-फूलने की इजाजत दे रहा है। आईएसकेपी नेता सनाउल्लाह गफारी की पाकिस्तान के अंदर कथित आतंकी कैशों में आने जाने का हवाला दिया है। ऑनलाइन मैगजीन 'अमेरिकन थिंकर'



की एक रिपोर्ट के अनुसार, जून में तालिबान ने दावा किया कि उन्होंने बलूचिस्तान और खैबर पख्तूनख्वा में उन जगहों पर हमले किए जो उनके आईएसकेपी से जुड़े थे।

रिपोर्ट में बताया गया है, 'पाकिस्तान की लंबे समय से चली आ रही यह रणनीति कि अफगानिस्तान को उसके अपने सुरक्षा सिस्टम का ही एक हिस्सा माना जाए, अब फेल हो चुकी है। दशकों तक, पाकिस्तानी सेना और खुफिया एजेंसी के नेताओं ने

'स्ट्रैटेजिक डेथ' (रणनीतिक गहराई) की नीति अपनाई। उनका मानना था कि काबुल में अपनी सोच के अनुकूल सरकार होने से भारत के खिलाफ पाकिस्तान को अतिरिक्त जगह मिलेगी और पश्चिमी सीमा पर दुश्मनी का खतरा नहीं रहेगा। अब यह सोच गलत साबित हो चुकी है।' रिपोर्ट में कहा गया, 'जब अगस्त 2021 में तालिबान सत्ता में लौटा, तो पाकिस्तानी नेताओं को उम्मीद थी कि वे उनकी बात मानेंगे। वे चाहते थे कि तालिबान ड्रॉड लाइन को स्वीकार करे, तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) को दबाए और पाकिस्तानी व्यापार मार्गों और उनकी मदद पर निर्भर रहे। लेकिन ऐसा हुआ नहीं। इसके बजाय, तालिबान ने अपनी आजादी को महत्व दिया। इस्लामाबाद और काबुल के बीच रिश्ते बिगड़ गए हैं और अब सीमा पर झड़पें, हवाई हमले, आर्थिक दबाव और आतंकवाद को समर्थन देने के आपसी आरोप-प्रत्यारोप हो रहे हैं।'

नेपाल त्रासदी : राष्ट्रपति पौडेल ने भारत का मदद के लिए जताया आभार

विश्व केसरी■
काठमांडू। नेपाल के राष्ट्रपति रामचंद्र पौडेल ने आपदा काल में भारत की मदद और पहुंचाई जा रही राहत सामग्री लिए दिल से धन्यवाद किया है। पौडेल ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। आभार जताते हुए लिखा, नेपाल की सरकार और जनता की ओर से मैं भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु का आभार व्यक्त करता हूं। भारत सरकार की ओर से दिखाई गई चिंता, सहयोग और एकजुटता के लिए नेपाल सरकार और जनता की ओर से दिल से धन्यवाद। दूसरे पोस्ट में उन्होंने आपदा में जान गंवाने वाले भारतीय नागरिकों के प्रति भी संवेदना जाहिर की। उन्होंने लिखा, 'हम 26 अगस्त, 2026 को आपदा में भारतीय नागरिकों की मौत पर भारत सरकार और वहां के लोगों के प्रति अपनी गहरी संवेदना और सहानुभूति व्यक्त



करते हैं।' नेपाल बाढ़ में मृतकों की संख्या लगातार बढ़ रही है। राष्ट्रीय आपदा जोखिम न्यूनीकरण और प्रबंधन प्राधिकरण (शनिवार सुबह 10 बजे तक का अपडेट) के मुताबिक 626 लोगों की मौत हो चुकी है जबकि 2500 के करीब लापता हैं। बाढ़ ने भारी तबाही मचाई है। रसुवा, चितवन, धादिंग, तनहुं, गोरखा, नुवाकोट और नवलपरासी ईस्ट (पूर्वी नवलपरासी) जैसी जगहों पर शव बरामद किए गए हैं। मौसम वैज्ञानिक, पहाड़ और ग्लेशियर विशेषज्ञ अचानक आई बाढ़ के कारणों की जांच कर रहे हैं। नेपाल सेना समेत कई स्वयंसेवक बाढ़ पीड़ितों को बचाने और घायलों की तलाश करने के काम में लगे हैं। ज्यादातर बचाव उड़ानें रसुवा, तिमुरे, त्रिशुली और धुंचे इलाकों पर केंद्रित हैं। आपदा काल में भारत अपने पड़ोसी देश की हरसंभव मदद कर रहा है। बाढ़ पीड़ित लोगों के लिए अब तक 57.5 टन आपातकालीन राहत सामग्री भेजी जा चुकी है। शुक्रवार रात 10 टन राहत सामग्री की एक और खेप काठमांडू पहुंची। राहत सामग्री के साथ 11 सदस्यीय चिकित्सकों और पैरामेडिक्स टीम भी नेपाल भेजी गई है।

संक्षिप्त खबर

भारत और अर्जेंटीना ने आर्थिक संबंधों को दी नई मजबूती

विश्व केसरी■
नई दिल्ली। भारत और अर्जेंटीना ने अपने आर्थिक और रणनीतिक संबंधों को और मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया है। ब्यूनस आयर्स में आयोजित भारत-अर्जेंटीना संयुक्त व्यापार समिति (जेटीसी) की चौथी बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की वर्ष 2025 की अर्जेंटीना यात्रा के दौरान तय किए गए रोडमैप की प्रगति की समीक्षा की गई और दोनों देशों ने व्यापार तथा निवेश सहयोग को और विस्तार देने की प्रतिबद्धता दोहराई। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अनुसार, बैठक में खनन, ऊर्जा और इंफ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में निवेश अवसरों पर विस्तार से चर्चा हुई। विशेष रूप से भारत की सरकारी कंपनी खनिज विदेश इंडिया लिमिटेड (काबिल) द्वारा अर्जेंटीना के लिथियम क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की उल्लेखनीय प्रगति को रेखांकित किया गया। अर्जेंटीना के केटामार्का प्रांत में काबिल की लिथियम खनन परियोजना, जो अर्जेंटीना में किसी भारतीय कंपनी की पहली लिथियम खनन पहल है, ने दूसरे चरण की ड्रिलिंग पूरी कर ली है। इसके अलावा साल्टा और जुजुय प्रांतों में भी सहयोग के नए अवसर तलाशे जा रहे हैं। माना जा रहा है कि लिथियम क्षेत्र में यह साझेदारी भारत की इलेक्ट्रिक वाहन और बैटरी विनिर्माण रणनीति को महत्वपूर्ण समर्थन दे सकती है।



एच-1बी ग्रेस पीरियड खत्म करने के प्रस्ताव की समीक्षा पूरी

विश्व केसरी■
वाशिंगटन। ट्रंप प्रशासन ने एच-1बी और दूसरे विदेशी प्रोफेशनल्स के लिए नौकरी खत्म होने के बाद मिलने वाले 60 दिन के 'ग्रेस पीरियड' (छूट की अवधि) को खत्म करने के प्रस्ताव की समीक्षा पूरी कर ली है। इससे हवाओं भारतीय कर्मचारियों और उनके परिवारों पर असर पड़ सकता है। होमलैंड सिक्योरिटी विभाग के '60-दिन की वैकल्पिक रियायती अवधि को खत्म करना' का प्रस्ताव 6 अगस्त को व्हाइट हाउस के सूचना और नियामक मामलों के कार्यालय को सौंपा गया था। आधिकारिक रेगुलेटरी रिकॉर्ड के अनुसार, 27 अगस्त को समीक्षा पूरी हुई और इसे 'बदलाव के साथ सहमत के तौर पर दर्ज किया गया। इसका महत्व है कि प्रस्ताव में कुछ बदलावों के साथ व्हाइट हाउस की समीक्षा प्रक्रिया पूरी हो गई है। यह प्रस्ताव अभी पब्लिश नहीं किया गया है और इसकी पूरी शर्तें अभी उपलब्ध नहीं हैं। इसलिए, अभी 60 दिन की सुरक्षा वाली मौजूदा व्यवस्था लागू रहेगी। अगला कदम आम तौर पर प्रस्तावित नियम को 'फेडरल रजिस्टर' में पब्लिश करना होगा, जिसके बाद लोगों की राय जानने के लिए एक समय-सीमा तय की जाएगी। इसके बाद, किसी भी बदलाव को लागू करने से पहले डीपचएस को लोगों की राय पर विचार करना होगा और अंतिम नियम जारी करना होगा। इस प्रस्ताव का रेगुलेटरी ईफेक्टिवेशन नंबर 1615-यूडी 22 है और इसे अमेरिकी सिटिजनशिप एंड इमिग्रेशन सर्विसेज तैयार कर रहा है। रेगुलेटरी रिकॉर्ड में इसे एक ऐसे प्रस्तावित नियम के तौर पर बताया गया है जो आर्थिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण नहीं है और जिसके लिए कोई कानूनी समय-सीमा तय नहीं है।



संयुक्त राष्ट्र ने अमेरिका और ईरान से बातचीत फिर शुरू करने का आग्रह किया

विश्व केसरी■
संयुक्त राष्ट्र। संयुक्त राष्ट्र की ओर से अमेरिका और ईरान से बातचीत को फिर से शुरू करने का आग्रह किया गया है। संयुक्त राष्ट्र के प्रवक्ता की ओर से बताया गया कि महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने अमेरिका और ईरान से कूटनीति के जरिए विवाद को खत्म करने के लिए बातचीत फिर से शुरू करने का आग्रह किया है। युद्ध के छह महीने बाद अमेरिका और ईरान के बीच रुकी हुई बातचीत पर महासचिव की राय पृष्ठे जाने पर, प्रवक्ता स्टीफन दुजारिक ने कहा, 'यह चल रहे संघर्ष के छह महीने पूरे होने का एक दुखद पड़ाव है। हम फिर से जोर



देते हैं कि इसका एकमात्र समाधान कूटनीतिक समाधान है। और हम अमेरिका और इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ ईरान दोनों से सार्थक बातचीत करने का आग्रह करते हैं।' सिन्हुआ समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, दुजारिक ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र कतर, पाकिस्तान, मिश्न, सऊदी अरब और कुवैत की

मध्यस्थता कोशिशों का पूरा समर्थन करता है और महासचिव उनके संपर्क में बने हुए हैं। उन्होंने कहा कि जो बात स्पष्ट है और महासचिव के लिए चिंता का विषय बनी हुई है, वह है इस संघर्ष के विनाशकारी मानवीय और आर्थिक परिणाम, जिसमें खाद्य आपूर्ति पर वैश्विक आर्थिक प्रभाव, मानवीय सामान का न पहुंच पाना, उर्वरकों की सीमित उपलब्धता और ऊर्जा की कोमलों में वृद्धि शामिल है। प्रवक्ता ने कहा कि इस संघर्ष के लिए महासचिव के व्यक्तिगत दूत, जीन अर्नॉल्ड, पक्षों और मध्यस्थों को मदद करने और एक स्थायी समाधान तक पहुंचने के लिए उपलब्ध हैं और संपर्क में हैं।

बलूचिस्तान के सीएम की बागानों को जलाने की धमकी पर मानवाधिकार संगठन ने जताई चिंता

विश्व केसरी■
क्वेटा। पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में मानवाधिकार की अनदेखी को लेकर एक बार फिर सवाल उठे हैं। एक प्रमुख मानवाधिकार संगठन ने शनिवार को प्रांतीय मुख्यमंत्री सरफराज बुगती के उस बयान की कड़ी निंदा की, जिसमें उन्होंने मस्तुंग जिले में स्थानीय लोगों के बागानों को 'जलाने और ध्वस्त करने' तथा उनके अधिकारों को गिरफ्तार करने की चेतावनी दी थी। मानवाधिकार संगठन बलूच वॉयस फॉर जस्टिस (बीवीजे) ने बुगती की टिप्पणियों को 'बेहद चिंताजनक और निंदनीय' बताते हुए कहा कि नागरिकों की संपत्ति और आजीविका के साधनों को निशाना बनाने की धमकी मौलिक मानवाधिकारों, संपत्ति के अधिकार और आजीविका के अधिकार को लेकर गंभीर चिंता पैदा करती है। पाकिस्तानी मीडिया आउटलेट डेली दुनिया की रिपोर्ट के अनुसार, बुगती ने शुक्रवार को क्वेटा स्थित सेंट्रल पुलिस ऑफिस में आयोजित एक



कार्यक्रम के दौरान कहा कि यदि मस्तुंग के बागानों से प्रांतीय गृह मंत्री या सुरक्षा बलों पर हमले होते हैं, तो संबंधित बागान मालिकों को भी हमलावरों का मददगार माना जाएगा। उन्होंने कहा कि यदि निजी संपत्तियों का इस्तेमाल कथित तौर पर आतंकी गतिविधियों के लिए जारी रहा तो सरकार चिंता पैदा करती है। पाकिस्तानी मीडिया आउटलेट डेली दुनिया की रिपोर्ट के अनुसार, बुगती ने शुक्रवार को क्वेटा स्थित सेंट्रल पुलिस ऑफिस में आयोजित एक

रहे बागानों को 'खत्त' कर देना। बीवीजे ने कहा कि बलूचिस्तान में मानवाधिकारों की स्थिति पहले से ही गंभीर चिंता का विषय है। ऐसे में स्थानीय लोगों के बागानों को जलाने की धमकी उनकी आजीविका और आय के स्रोतों को खतरे में डाल सकती है तथा इसे स्थानीय आबादी पर सामूहिक दबाव या सामूहिक दंड के रूप में देखा जा सकता है। संगठन ने कहा कि बागानों को जलाने या ध्वस्त करने और उनके मालिकों को गिरफ्तार करने की धमकी नागरिकों के आर्थिक और मौलिक मानवाधिकारों का गंभीर उल्लंघन होगी। बीवीजे ने पाकिस्तानी अधिकारियों से नागरिकों को डराने-धमकाने, उनकी संपत्ति को नुकसान पहुंचाने या उन्हें सामूहिक दंड देने वाली किसी भी कार्रवाई से बचने की अपील की। संगठन ने मस्तुंग के स्थानीय लोगों के मानवाधिकारों, आर्थिक अधिकारों और संपत्ति के अधिकारों की रक्षा सुनिश्चित करने की भी मांग की।

दक्षिण कोरिया-फ्रांस रक्षा सहयोग बढ़ाने पर सहमत, उत्तर कोरिया-रूस सैन्य गठजोड़ पर चिंता

विश्व केसरी■
सोल। उत्तर कोरिया और रूस के बीच बढ़ते सैन्य सहयोग पर दक्षिण कोरिया और फ्रांस ने चिंता जाहिर की। इसके साथ ही दोनों देशों ने रणनीतिक और रक्षा समन्वय मजबूत करने पर सहमत जताई। दोनों देशों के रक्षा अधिकारियों ने कोरियाई प्रायद्वीप और यूरोप की सुरक्षा चुनौतियों के बीच बढ़ते आपसी संबंधों पर चर्चा की। योनहाप न्यूज एजेंसी ने बताया कि दक्षिण कोरिया के रक्षा मंत्रालय के अनुसार, यह चर्चा शुक्रवार को पेरिस में आयोजित रणनीतिक संवाद के दौरान हुई। दक्षिण कोरिया के नीति धक्कामलों के उप रक्षा मंत्री किम होंग-चोल और फ्रांस के सशस्त्र बल एवं पूर्व सैनिक मामलों के मंत्रालय में अंतरराष्ट्रीय संबंध एवं रणनीति के महानिदेशक गिलॉम ओलानिए ने बैठक में हिस्सा लिया। बैठक में दोनों पक्षों ने उत्तर कोरिया



के परमाणु और मिसाइल खतरों का आकलन साझा किया। अधिकारियों ने इस बात पर जोर दिया कि यूरोप और हिंद-प्रशांत क्षेत्र की सुरक्षा अब पहले की तुलना में कहीं अधिक आपस में जुड़ गई है। ऐसे में दोनों देशों के बीच रक्षा और रणनीतिक समन्वय को और मजबूत करने की जरूरत है। दक्षिण कोरिया ने उत्तर कोरिया के साथ शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की अपनी नीति से फ्रांस को अवगत कराया और इस दिशा में पेरिस से

लगातार समर्थन और ध्यान बनाए रखने का आग्रह किया। दोनों देशों ने रक्षा सहयोग के संस्थागत ढांचे को मजबूत करने पर भी सहमत जताई। इसके तहत गोपनीय सैन्य सूचनाओं के आदान-प्रदान से जुड़े द्विपक्षीय समझौते में संशोधन की संभावना पर चर्चा हुई। साथ ही, संयुक्त सैन्य अभ्यास और विभिन्न सैन्य आदान-प्रदान के जरिये दोनों सेनाओं के बीच बेहतर तालमेल और इंटरऑपरेबिलिटी बढ़ाने पर सहमत बनी।

मक्का समझौते में राजनीतिक इच्छाशक्ति का अभाव, त्रिपक्षीय संधि विरोधाभास से भरी : रिपोर्ट

विश्व केसरी■
ओटावा। पाकिस्तान, सऊदी अरब और तुर्की के बीच हुए मक्का समझौते में कई विरोधाभास हैं। इसमें राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी दिखती है तो मूल्यों में भी समानता नहीं है। एक रिपोर्ट समझौते में मौजूद खामियों को उजागर करती है। एक रिपोर्ट में बताया गया है कि कोई साझा मूल्य, समान हित या खतरे को लेकर एक जैसी सोच न होने और किसी साझा दुश्मन के न होने के कारण, इस त्रिपक्षीय समझौते के सामने यह बुनियादी सवाल है कि आखिर ये एकजुट कैसे रहेंगे। कनाडा स्थित 'जियोपॉलिटिकल मॉनिटर' की एक रिपोर्ट में कहा गया है, 'ईरान युद्ध मध्य पूर्व की भू-राजनीति को बदल रहा है। खाड़ी क्षेत्र में अमेरिकी ठिकानों की बार-बार निशाना बनाया गया है और अमेरिका समुद्री यातायात और



ऊर्जा की आपूर्ति के लिए होर्मुज् जलडमरूमध्य को पूरी तरह से खोलने में असमर्थ रहा है। इसने मध्य पूर्व के देशों को वाशिंगटन में हटकर अपने रक्षा साझेदारों के विविधता लाने के लिए प्रेरित किया है। इस बदलती रणनीति का सबसे स्पष्ट उदाहरण अगस्त की शुरुआत में देखने को मिला, जब सऊदी अरब, तुर्की और पाकिस्तान ने मक्का संयुक्त रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर किए।' मक्का समझौते को नाटो जैसे सुरक्षा समझौते के तौर पर पेश किया जा रहा है, जिसमें नाटो के अनुच्छेद 5 जैसा ही प्रावधान है;

इसके तहत तीनों देशों में से किसी एक पर भी सशस्त्र हमले को उन सभी पर हमला माना जाएगा। मक्का समझौते में मौजूद विरोधाभास को उजागर करते हुए रिपोर्ट में कहा गया है कि इस समूह के कुछ सदस्यों के संबंध एक-दूसरे के दुश्मनों के साथ गहरे हैं। इसमें सवाल उठाया गया है कि क्या सऊदी अरब, जिसने पिछले दशक में भारत के साथ अपने संबंधों को काफी मजबूत किया है, अमेरिकी ठिकानों के साथ भविष्य के किसी संघर्ष में पाकिस्तान का समर्थन करेगा?

मैडिसन स्वचायर में आरएसएस प्रमुख देंगे भाषण, जहां पीएम मोदी से लेकर ट्रंप तक कई बड़ी हस्तियां कर चुकी हैं कार्यक्रम

विश्व केसरी■
न्यूयॉर्क। मैडिसन स्वचायर गार्डन (एमएसजी), जहां शनिवार को आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत भाषण देंगे, एक बहुत बड़ा एरिना है। राजनीति, मनोरंजन, खेल और धर्म के नजरिए से इसकी खास अहमियत है। भागवत उसी जगह मंच संभालेंगे जहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2014 में चुनाव जीतने के बाद दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के नेता के तौर पर अमेरिका में अपना पहला सार्वजनिक कार्यक्रम किया था। वे संयुक्त राष्ट्र की हार्ड-लेवल मीटिंग के लिए शहर आए थे। 22,000 लोगों की क्षमता वाला यह एरिना खचाखच भर गया था क्योंकि उनके समर्थक और वे लोग जो भारत में जबरदस्त

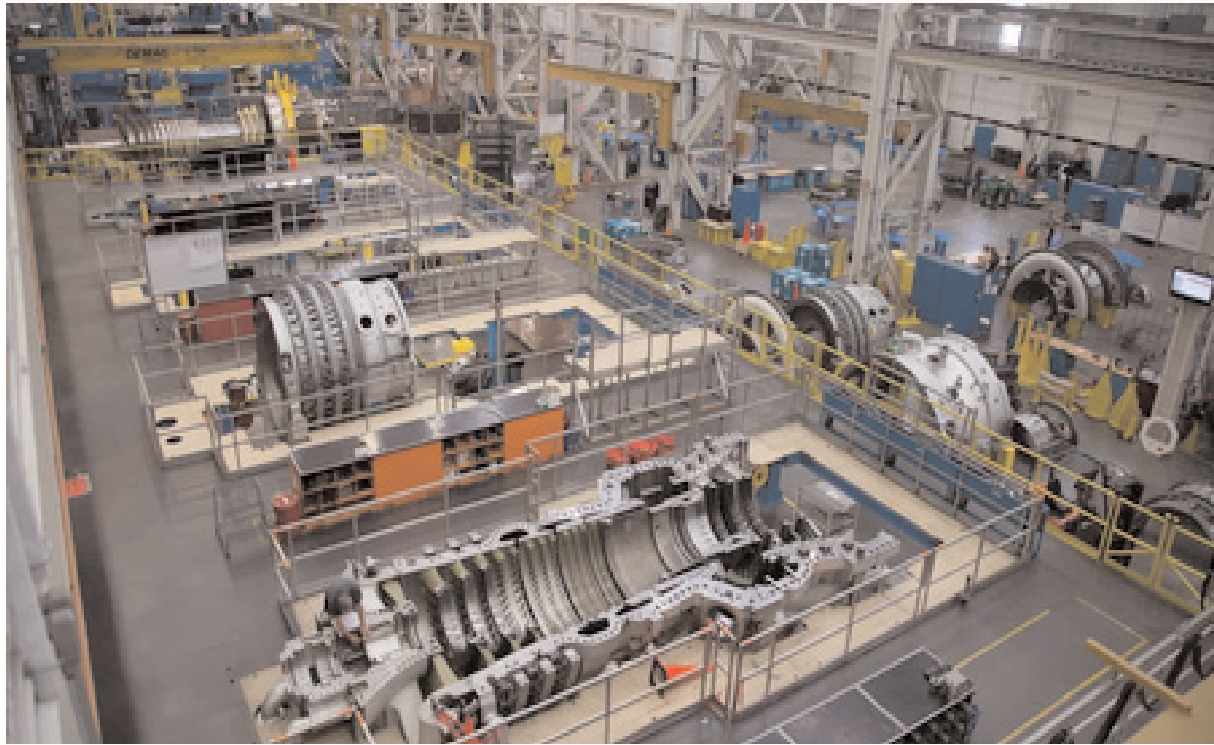


जीत हासिल करने वाले इस नेता के बारे में जानने को उत्सुक थे, उन्हें सुनने और उनका उत्साह बढ़ाने के लिए उमड़ पड़े थे। यहीं पर

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने 2024 में शहर में शानदार वापसी की थी, जहां उन्हें कानूनी मुश्किलों का सामना करना पड़ा था।

राष्ट्रपति जिमी कार्टर, बिल क्लिंटन और जॉर्ज डब्ल्यू बुश को यहीं उनकी पार्टियों के सम्मेलनों में उम्मीदवार के तौर पर चुना गया था। रिपब्लिकन पार्टी ने 2004 में और डेमोक्रेटिक पार्टी ने 1976, 1980 और 1992 में अपना राष्ट्रीय सम्मेलन यहीं आयोजित किया था। न्यूयॉर्क शहर के बीचों-बीच, टाइम्स स्क्वायर से दस ब्लॉक दक्षिण में स्थित 76,000 वर्ग मीटर का यह एरिना एक अनोखी आर्किटेक्चरल संरचना है। इसे न्यूयॉर्क के पेन्सिलवेनिया स्टेशन - जिसे संक्षेप में 'पेन' कहा जाता है - के ऊपर बनाया गया है। यह अमेरिका का सबसे व्यस्त ट्रांजिट हब है, जहां लंबी दूरी की ट्रेनें, कम्प्यूटर रेल और मेट्रो एक साथ मिलती हैं।

जुलाई में भारत का औद्योगिक उत्पादन 6.7 प्रतिशत बढ़ा, विनिर्माण क्षेत्र की मजबूत प्रदर्शन से मिली रफ्तार



विश्व केसरी ■ नई दिल्ली। भारत की औद्योगिक गतिविधियों ने जुलाई 2026 में मजबूत प्रदर्शन दर्ज किया है। सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय द्वारा शुक्रवार को जारी आंकड़ों के अनुसार, औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी) में जुलाई के दौरान 6.7 प्रतिशत की सालाना वृद्धि दर्ज की गई। इस वृद्धि में सबसे बड़ा योगदान विनिर्माण क्षेत्र का रहा, जिसने देश के औद्योगिक उत्पादन को मजबूती प्रदान की। देश के औद्योगिक उत्पादन सूचकांक में तीन-चौथाई से अधिक हिस्सेदारी रखने वाले विनिर्माण क्षेत्र ने जुलाई में 7.3 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की। यह क्षेत्र रोजगार सृजन और औद्योगिक विकास का प्रमुख आधार माना जाता है और इंजीनियरिंग एवं तकनीकी संस्थानों से निकलने वाले युवाओं के लिए बड़े पैमाने पर रोजगार अवसर उपलब्ध कराता है।

के अनुसार, पूंजीगत वस्तुओं (कैपिटल गुड्स) का उत्पादन जुलाई में 16.1 प्रतिशत बढ़ा। पूंजीगत वस्तुओं में फैक्ट्रियों में उपयोग होने वाली मशीनें और उपकरण शामिल होते हैं। इस श्रेणी में वृद्धि को अर्थव्यवस्था में बढ़ते निवेश का संकेत माना जाता है, जो भविष्य में रोजगार और आय सृजन को बढ़ावा देता है।

उपभोक्ता मांग में भी मजबूती देखने को मिली। उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं (कंज्यूमर ड्यूरैबल्स) जैसे इलेक्ट्रॉनिक सामान, रेफ्रिजरेटर और टेलीविजन के उत्पादन में 10.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जिसे बढ़ती आय और बेहतर उपभोक्ता विश्वास ने समर्थन दिया।

हालांकि, उपभोक्ता गैर-टिकाऊ वस्तुओं (कंज्यूमर नॉन-ड्यूरैबल्स) जैसे साबुन, सौंदर्य प्रसाधन और दैनिक उपयोग की वस्तुओं के उत्पादन में 1 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई।

सरकारी निवेश की बढ़ोतरी बुनियादी ढांचा एवं निर्माण सामग्री क्षेत्र ने भी अच्छा प्रदर्शन किया। इस श्रेणी में उत्पादन 6.9 प्रतिशत बढ़ा। राजमार्ग, बंदरगाह और रेलवे परियोजनाओं पर सरकार के बड़े निवेश का लाभ इस क्षेत्र को मिला है। ये परियोजनाएं बड़े पैमाने पर रोजगार सृजन के साथ समग्र आर्थिक विकास को भी गति देती हैं।

रीढ़ की हड्डी को मजबूत बनाता है शलभासन, जानिए सही विधि और फायदे



विश्व केसरी ■

नई दिल्ली। योग शरीर और मन को स्वस्थ रखने की एक प्राचीन मांसपेशियों के लिए भी वरदान माना जाता है। आयुष मंत्रालय के अनुसार, शलभासन एक ऐसा योगासन है जिससे रीढ़ की हड्डी मजबूत होती है और शरीर का वजन नियंत्रित रहता है। इस आसन को नियमित और सही तरीके से करने से पीठ की मांसपेशियों को मजबूत करने में मदद मिलती है। जिन लोगों को हल्का लोअर बैक दर्द या साइटिका जैसी समस्या रहती है, उनके लिए भी यह आसन उपयोगी हो सकता है, हालांकि किसी भी तरह के गंभीर दर्द या चोट की स्थिति में इसे खुद से

सिर्फ रीढ़ की हड्डी को मजबूत करता है बल्कि पाचन तंत्र और मांसपेशियों के लिए भी वरदान माना जाता है। आयुष मंत्रालय के अनुसार, शलभासन एक ऐसा योगासन है जिससे रीढ़ की हड्डी मजबूत होती है और शरीर का वजन नियंत्रित रहता है। इस आसन को नियमित और सही तरीके से करने से पीठ की मांसपेशियों को मजबूत करने में मदद मिलती है। जिन लोगों को हल्का लोअर बैक दर्द या साइटिका जैसी समस्या रहती है, उनके लिए भी यह आसन उपयोगी हो सकता है, हालांकि किसी भी तरह के गंभीर दर्द या चोट की स्थिति में इसे खुद से

करने के बजाय विशेषज्ञ की सलाह लेना बेहतर है।

शलभासन देखने में भले ही आसान लगे, लेकिन इसे करते समय शरीर के कई हिस्से एक साथ काम करते हैं। इस आसन में पेट के बल लेटकर पैरों को ऊपर उठाने का प्रयास किया जाता है। इससे पीठ और कमर के आसपास की मांसपेशियां सक्रिय होती हैं। यही वजह है कि इसे बैक स्ट्रेंथ बढ़ाने वाले योगासनों में शामिल किया जाता है।

शलभासन को करने के लिए सबसे पहले पेट के बल जमीन पर लेट जाएं। अपने हाथों की आगे की ओर फैला दें, हथेलियां ऊपर की ओर और पैर सीधे हों। माथा या टुडुड़ी जमीन को छू रही हो। गहरी सांस लें और शरीर को स्थिर करें। सांस छोड़ते हुए दोनों पैरों को एक साथ धीरे-धीरे ऊपर उठाएं। पैरों को सीधा रखें और घुटनों को न मोड़ें। इसके साथ ही हाथों को भी ऊपर की ओर उठाना है। यह कुछ सुपरमैन पोज जैसा है।

इस स्थिति में 10-30 सेकेंड तक रुकें, सामान्य रूप से सांस लेते रहें। इसके बाद धीरे-धीरे पैरों और छाती को जमीन पर लाएं और विश्राम करें।

इस आसन को करने के दौरान कुछ सावधानियां भी बरतनी जरूरी है। गर्भावस्था, हर्निया, या पीठ/गर्दन की चोट वाले लोग इसे न करें।

सर्दी-जुकाम समझकर न करें अनदेखा, हो सकता है एच1एन1 का संकेत, जानें बचाव के तरीके

विश्व केसरी ■ नई दिल्ली। बदलते मौसम के साथ सर्दी-जुकाम, खांसी और बुखार जैसी समस्याएं आम हो जाती हैं। इन्हीं में से एक है इन्फ्लुएंजा ए (एच1एन1)। स्वस्थ व्यक्तियों में यह संक्रमण ज्यादातर मामलों में अपने आप ठीक होने वाला होता है। हालांकि, इसके लक्षणों को नजरअंदाज करना ठीक नहीं है, क्योंकि बुजुर्गों और पहले से किसी स्वास्थ्य समस्या से जुड़े रहे लोगों को ज्यादा सावधानी



बरतने की जरूरत होती है। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट कर बताया कि एच1एन1 होने पर सबसे आम लक्षणों में बुखार, खांसी, गले में खराश, नाक बहना, सिरदर्द, शरीर या मांसपेशियों में दर्द और थकान शामिल हैं। कुछ लोगों को मतली, उल्टी या दस्त जैसी परेशानी भी हो सकती है। हर व्यक्ति में सभी लक्षण दिखाई दें, यह जरूरी नहीं है। कई बार शुरुआत में सामान्य

पलू या वायरल जैसा ही महसूस होता है। ऐसे में शरीर के संकेतों पर ध्यान देना जरूरी है। अगर बुखार या खांसी के साथ शरीर में काफी दर्द और कमजोरी महसूस हो रही है, तो पर्याप्त आराम करें और खुद को हाइड्रेट रखें। पानी, सूप या अन्य उपयुक्त तरल पदार्थ लेते रहें, ताकि शरीर में पानी की कमी न हो। आराम करने से शरीर को संक्रमण से लड़ने में मदद मिलती है। एच1एन1 जैसे श्वसन संक्रमण

से बचाव के लिए रोजमर्रा की कुछ छोटी-छोटी आदतें काफी महत्वपूर्ण हैं। हाथों को नियमित रूप से साबुन और पानी से धोएं। खांस्टे या छींकते समय मुंह और नाक को ढकें। इस्तेमाल किए गए टिशू को उचित तरीके से फेंकें और हाथ साफ करें। अगर आप अस्वस्थ महसूस कर रहे हैं, तो घर पर रहें और दूसरों के संपर्क में आने से बचें। इससे संक्रमण के फैलने की संभावना कम करने में मदद मिलती है।

बीमारी के दौरान अपनी सेहत पर नजर रखना भी जरूरी है। अगर लक्षण 5-6 दिनों में कम नहीं होते, लगातार बने रहते हैं या हालत बिगड़ती महसूस होती है, तो डॉक्टर से सलाह लें। खासतौर पर छोटे बच्चों, बुजुर्गों और निजी अन्य स्वास्थ्य समस्या से जुड़े रहे लोगों में लक्षण दिखाई देने पर चिकित्सा सलाह लेने में देर नहीं करनी चाहिए। जल्सरत पड़ने में नजदीकी सरकारी स्वास्थ्य केंद्र में भी संपर्क किया जा सकता है।

ज्यादा चीनी, नमक या फैट वाले खाने-पीने के सामान के पैकेट पर लाल रंग की चेतावनी दें; एफएसएसएआई का प्रस्ताव

विश्व केसरी ■ नई दिल्ली। फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एफएसएसएआई) ने प्रोसेस किए गए खाने-पीने की उन चीजों के पैकेट के सामने लाल रंग का वॉरिंग लेबल लगाने का प्रस्ताव दिया है, जिनमें चीनी, नमक या फैट की मात्रा ज्यादा होती है। यह कदम इसलिए जरूरी है ताकि ग्राहक सोच-समझकर सही चुनाव कर सकें। रॉयटर्स की रिपोर्ट के मुताबिक, एफएसएसएआई ने सुप्रीम कोर्ट में बताया है कि चेतावनी लेबल पर साफ-साफ लिखा होगा- जैसे 'ज्यादा वसा वाला', 'ज्यादा चीनी वाला', 'ज्यादा नमक वाला' या 'बहुत ज्यादा मीठा पेय'... ताकि लोग आसानी से समझ सकें कि किस प्रोडक्ट में कौन सी चीज ज्यादा मात्रा में है। सुप्रीम कोर्ट में यह दलील इसलिए दी गई क्योंकि वह पश्चिमी देशों की तर्ज पर चेतावनी लेबल लगाने की मांग करने वाले स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं की याचिकाओं पर



सुनवाई कर रहा है। सुप्रीम कोर्ट ने इस महीने की शुरुआत में एक सुनवाई में एफएसएसएआई से कहा था कि वह इन लेबलों को लागू करने में तेजी लाए। नेस्ले, पेप्सिको और कोका-कोला जैसी बड़ी खाद्य कंपनियां इस कदम का विरोध कर रही हैं क्योंकि इससे बिक्री प्रभावित होने की आशंका है। सुप्रीम कोर्ट ने पिछली सुनवाई के दौरान अनिवार्य पैकेज्ड फूड

सर्वोच्च न्यायालय की पीठ ने वैधानिक नियामक की धीमी गति पर गहरा असंतोष व्यक्त किया। न्यायाधीशों ने सवाल किया कि क्या रेगुलेटरी अथॉरिटी वास्तव में भारतीय आबादी के स्वास्थ्य को प्राथमिकता देते हैं। नतीजतन, अदालत ने चेतावनी दी कि यदि कार्यकारी शाखा स्वतंत्र रूप से कार्य करने में विफल रही तो न्यायिक आदेशों का पालन किया जाएगा। सुप्रीम कोर्ट ने उन तर्कों को खारिज कर दिया जिसमें कहा गया था कि पैकेज के सामने चेतावनी लेबल पारंपरिक भारतीय पैक किए गए स्नैक्स पर गलत तरीके से जुर्माना लगा सकते हैं। पीठ ने कहा कि व्यावसायिक हित सार्वजनिक स्वास्थ्य अनिवार्यताओं पर हावी नहीं हो सकते। इसने नियामक संस्था को एक निश्चित रूपरेखा स्थापित करने के लिए दो सप्ताह की सख्त अवधि प्रदान की। न्यायाधीशों ने इस बात पर जोर दिया कि युवा उपभोक्ताओं को अल्ट्रा-प्रोसेस्ड वस्तुओं के एग्रेसिव मार्केटिंग का सामना करना पड़ता है।

दिमाग को हमेशा रखना है जवान, तो पहेलियों से करो दोस्ती, इन टिप्स को आजमाएं

विश्व केसरी ■ नई दिल्ली। बुढ़ापे में भी अगर दिमाग को चुस्त-दुरुस्त रखना है, तो उसे खाली मत छोड़िए। उसे काम में लगाए रखिए। ऐसा हमारा नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार का कहना है।

मंत्रालय ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट कर कहा कि अपने मस्तिष्क को व्यस्त रखना बहुत जरूरी है। मंत्रालय ने लिखा, 'अपने मस्तिष्क को व्यस्त रखें। मानसिक प्रेरणा (उद्दीपन) से स्मृति और संज्ञानात्मक स्वास्थ्य बेहतर होता है। पहेलियां हल करें, दिमागी खेल खेलें और जिज्ञासु बने रहें।'

मंत्रालय का कहना है कि जैसे शरीर को फिट रखने के लिए कसरत जरूरी है, वैसे ही दिमाग को फिट रखने के लिए उसकी भी कसरत जरूरी है। दिमाग की कसरत का सबसे आसान तरीका पहेलियां, दिमागी खेल और नई-नई चीजों के बारे में जानने की इच्छा है। अक्सर देखा जाता है कि उम्र बढ़ने के साथ-साथ लोग चीजें भूलने लगते हैं। रखा हुआ सामान याद नहीं रहता, किसी का नाम याद करने में वक्त लगता है। ये सब संज्ञानात्मक स्वास्थ्य कमजोर होने की निशानी है। अगर आप पहले से ही अपने दिमाग को एक्टिव रखेंगे, तो इस परेशानी से काफी हद तक बचा जा सकता है।

सुबह अखबार में जो सुडोकू या क्रॉसवर्ड आता है, वो सिर्फ टाइमपास नहीं है। वो आपके दिमाग के लिए जिम जैसा है। जब आप कोई पहेली हल करते हैं, तो आपके दिमाग की नसें ज्यादा तेजी से काम करती हैं। इससे आपकी याददाश्त तेज होती है और सोचने-समझने की क्षमता बढ़ती है। इसी तरह शतरंज, कैरम, लुडो जैसे दिमागी खेल भी बहुत फायदेमंद हैं। ये खेल आपको रणनीति बनाना सिखाते हैं और आपके फोकस को बढ़ाते हैं। घर में दादा-दादी, नाना-नानी के साथ बच्चे अगर ये खेल खेलें, तो दोनों को फायदा होगा।

जापान: 11 साल बाद जन्मदर में मामूली सुधार, इस साल छह महीने में 3.42 लाख बच्चों का जन्म



विश्व केसरी ■

टोक्यो। जापान में बुजुर्ग होती आबादी और लगातार घटती जन्म दर के बीच थोड़ी राहत की खबर सामने आई है। ये खुशखबरी एक दशक से अधिक समय बाद सुनने को मिली है। स्वास्थ्य मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक, जनवरी से

जून 2026 के दौरान देश में 3,42,068 बच्चों का जन्म हुआ, जो पिछले साल की समान अवधि की तुलना में 0.8 प्रतिशत अधिक है। इसमें विदेशी नागरिकों के यहां जन्मे बच्चे भी शामिल हैं। क्योडो न्यूज एजेंसी ने शनिवार को एक रिपोर्ट प्रकाशित की।

डेंगू, मलेरिया और स्वाइन फ्लू से निपटने के लिए प्रयागराज में तैयारी पूरी, डॉक्टर ने बताए बचाव के आसान तरीके

विश्व केसरी ■

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में 'डेंगू, मलेरिया और फ्लू' जैसे मौसमी संक्रमणों को लेकर जिला प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग ने तैयारियां तेज कर दी हैं। तेज बहादुर सप्रू अस्पताल के वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. मंसूर अहमद ने बताया कि अस्पतालों में मरीजों की जांच और इलाज के लिए जरूरी इंतजाम किए गए हैं। डेंगू के मरीजों के लिए अलग वार्ड, दवाएं और जांच की सुविधाएं उपलब्ध हैं। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे लक्षणों को नजरअंदाज न करें और समय रहते डॉक्टर से सलाह लें। डॉ. मंसूर अहमद ने स्वाइन फ्लू



को लेकर बताया कि यह संक्रमण हवा के जरिए फैल सकता है। संक्रमित व्यक्ति के खांसने या छींकने पर निकलने वाली बूंदों के संपर्क में आने से संक्रमण दूसरे लोगों तक पहुंच सकता है। खासकर

और जुकाम है तो बेहतर होगा कि वह मास्क लगाए। सार्वजनिक स्थानों पर छींकते या खांसते समय रुमाल, टिशू या मास्क का इस्तेमाल करना चाहिए। इससे आसपास मौजूद लोगों तक संक्रमण पहुंचने की संभावना कम की जा सकती है। डॉक्टर के मुताबिक वायरल संक्रमण के दौरान आराम और पर्याप्त पानी पीना बेहद जरूरी है। शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बेहतर रखना भी मददगार हो सकता है। उन्होंने बताया कि वायरल फीवर के कई मामले समय के साथ खुद ठीक हो जाते हैं और मरीज को मुख्य रूप से लक्षणों के आधार पर उपचार दिया जाता है।

हॉकी विश्व कप: भारतीय पुरुष टीम का सफर

हार के साथ समाप्त, टूर्नामेंट में 8वें स्थान पर रही

विश्व केसरी ■
चावरे। भारतीय पुरुष हॉकी टीम का सफर एफआईएच हॉकी विश्व कप 2026 में बेहद निराशाजनक तरीके से समाप्त हुआ। खिताब की दौरे से पहले ही बाहर हो चुकी भारतीय टीम शुक्रवार को खेले गए मुकाबले में बेल्जियम से हारकर टूर्नामेंट में आठवें स्थान पर रही। भारतीय टीम को शूटआउट में बेल्जियम से 4-3 से हारकर आठवें स्थान से संतोष करना पड़ा। भारत के आखिरी मिनट में किए गए गोल के बाद रेगुलेशन पीरियड 3-3 से बराबरी पर खत्म हुआ, जिससे विजेता का फैसला शूटआउट से हुआ।

मैच की शुरुआत में, बेल्जियम ने आक्रामक फुल-प्रेस के साथ शुरुआत की और शुरुआती मिनट में ही भारतीय सर्वकल में घुस गया, लेकिन भारत ने शुरुआती खतरे का आराम से सामना किया। भारत ने धीरे-धीरे अपनी पकड़ बनाई और छठे मिनट में बढ़त बना ली। मनप्रीत सिंह ने अभिषेक को एक टाइट एंगल पर पास देकर मौका बनाया। फॉरवर्ड ने एक जोरदार धक्का दिया जिसे वनाश अपने ही गोल में डाल सके। बेल्जियम ने तुरंत पेनल्टी कॉर्नर जीतकर जवाब दिया, लेकिन सूरज करकेरा हेंड्रिक्स के फ्लिक के सामने डटे रहे।



बेल्जियम का दबाव बढ़ गया, जुगराज सिंह ने इंडियन पोस्ट के पास सही समय पर दखल दिया और नेल्सन ओनाना डाइविंग डिफ्लेक्शन से बाल-बाल बच गए। फिर इंडिया की टीम 10 खिलाड़ियों की रह गई जब हरमनप्रीत को येलो कार्ड मिला क्योंकि इंडिया को पिच पर एक अतिरिक्त खिलाड़ी मिला था। बेल्जियम ने नंबरों की बढ़त का इस्तेमाल दबाव बनाने के लिए किया। जुगराज की स्टिक से बॉल निकलने के बाद एक वीडियो

रेफरल से पेनल्टी कॉर्नर मिला, लेकिन करकेरा ने हेंड्रिक्स का एक और शानदार बचाव किया। इसके बाद भारतीय गोलकीपर ने रीटेक किए गए सेट-पीस से बेल्जियम के ड्रैग-फ्लिकर को फिर से रोक दिया। हरमनप्रीत दूसरे क्वार्टर की शुरुआत में सर्वस्पेन चेंयर से लौटे, और भारत ने जल्द ही एक सफल वीडियो रेफरल के बाद अपना पहला पेनल्टी कॉर्नर हासिल कर लिया। हरमनप्रीत का फ्लिक रशर के पैर पर लगा, और उसके बाद के

रीटेक को बेल्जियम के डिफेंस ने रोक दिया। इसके बाद बेल्जियम ने मैच का पासा पलट दिया। 22वें मिनट में, डुवेकोट ने गोल के सामने क्रॉस मिलने के बाद जगह बनाई, हार्दिक सिंह और संजय को गलत जगह पर रखा, और गोलकीपर मोहित हो हराकर स्कोर 1-1 कर दिया। मुश्किल से एक मिनट बाद, बेल्जियम को एक और पेनल्टी कॉर्नर मिला और लैबोचरे ने इसे गोल में बदलकर मेजबान टीम को 2-1 की बढ़त दिला दी।

बेल्जियम ने मैच पर अपना दबदबा बनाए रखा, बार-बार भारतीय गोल पर खतरा पैदा किया। एक और पेनल्टी कॉर्नर डिफेंड किया गया, जबकि मोहित को अपने किकर से बचाने के लिए कहा गया। भारत ने और दबाव झेला, लेकिन हाफ-टाइम तक बेल्जियम का कंट्रोल मजबूत रहा और वह 2-1 से आगे था। इंटरवल के तुरंत बाद भारत ने जवाब दिया। राजेंद्र सिंह ने पेनल्टी कॉर्नर बनाने में मदद की और हरमनप्रीत ने ड्रैग-फ्लिक मारकर वानाश को छकाकर स्कोर 2-2 कर दिया। बेल्जियम ने गोल को चैलेंज किया, लेकिन वीडियो रिव्यू में कोई उल्लंघन नहीं पाया गया और भारत का बराबरी का गोल बना रहा।

मोमेंटम वापस बेल्जियम की तरफ मुड़ गया। हेंड्रिक्स पेनल्टी कॉर्नर से अपनी बढ़त वापस लाने की कोशिश करते दिखे, लेकिन भारत ने कामयाबी से फैसला रफर कर दिया और गोल ऊंचाई के कारण रद्द कर दिया गया। तीसरा क्वार्टर बराबरी पर खत्म हुआ, लेकिन आखिरी पीरियड की शुरुआत में बेल्जियम ने फिर से बढ़त बना ली। मनप्रीत के चेहरे पर लैबोचरे की एक करीबी कोशिश लगी और उन्हें खून से लथपथ चोट के साथ मैदान छोड़ना पड़ा।

जैस्मिन लंबोरिया: लड़कों के साथ मुक्केबाजी के अभ्यास से शुरू हुआ करियर, कॉमनवेल्थ गेम्स 2026 में जीता स्वर्ण



एजेंसी ■
नई दिल्ली। कॉमनवेल्थ गेम्स 2026 में भारतीय मुक्केबाजों का प्रदर्शन शानदार रहा था। भारतीय टीम ने रिकॉर्ड 7 स्वर्ण पदक जीते थे। इसमें पुरुष और महिला दोनों मुक्केबाजों ने स्वर्ण जीते थे। स्वर्ण पदक जीतने वाली महिला मुक्केबाजों में एक नाम जैस्मिन लंबोरिया का भी था। लंबोरिया ने 57 किग्रा भारवर्ग में स्वर्ण पदक जीता था।

कड़ी मेहनत, दृढ़ निश्चय और प्रतिभा के बल पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने वाली जैस्मिन लंबोरिया का जन्म 30 अगस्त 2001 को भिवानी, हरियाणा में हुआ था। भिवानी को

‘लिटिल क्यूबा’ के नाम से जाना जाता है। यह स्थान मुक्केबाजी का गढ़ है। जैस्मिन ने 2021 में दुबई में आयोजित एशियन बॉक्सिंग चैंपियनशिप में कांस्य पदक जीतकर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। उसी वर्ष एक अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट में रजत पदक और 2022 में बर्मिंघम राष्ट्रमंडल खेलों में 60 किग्रा लाइटवेट वर्ग में कांस्य पदक जीता। उन्होंने अस्ताना में 2025 में आयोजित विश्व बॉक्सिंग कप में जैस्मिन ने गोल्ड मेडल जीत वैश्विक मंच पर अपनी ने प्रशिक्षण शुरू किया, उस समय

वहां कोई महिला मुक्केबाज नहीं थी। इसलिए उन्होंने लड़कों के साथ प्रशिक्षण लिया, जिसने उनकी तकनीक और आत्मविश्वास को और मजबूत किया। जैस्मिन ने 2021 में दुबई में आयोजित एशियन बॉक्सिंग चैंपियनशिप में कांस्य पदक जीतकर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। उसी वर्ष एक अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट में रजत पदक और 2022 में बर्मिंघम राष्ट्रमंडल खेलों में 60 किग्रा लाइटवेट वर्ग में कांस्य पदक जीता। उन्होंने अस्ताना में 2025 में आयोजित विश्व बॉक्सिंग कप में जैस्मिन ने गोल्ड मेडल जीत वैश्विक मंच पर अपनी ने प्रशिक्षण शुरू किया, उस समय

‘हमें कोई नहीं रोक पाएगा’, एशियन गेम्स 2026 में स्वर्ण पदक पर शूटर आशी चौकसे की नजर

विश्व केसरी ■
भोपाल। भारतीय राइफल शूटर आशी चौकसे ने साल 2018 में अचानक प्रतिस्पर्धी शूटिंग शुरू की थी। अब 24 वर्षीय आशी अपने दूसरे एशियन गेम्स की तैयारी कर रही हैं। उन्होंने अब तक एशियन गेम्स में एक कांस्य और दो रजत पदक जीते हैं। अब उनका बड़ा लक्ष्य आइची-नागोया 2026 एशियन गेम्स में स्वर्ण पदक जीतना है।



आशी ने 2022 एशियन गेम्स (जो 2023 में हुए थे) में महिलाओं के 10 मीटर एयर राइफल टीम इवेंट में रजत, महिलाओं के 50 मीटर राइफल 3पी टीम इवेंट में रजत और महिलाओं के 50 मीटर राइफल 3पी इवेंट में कांस्य पदक जीता था। उन्हें लगता है कि यहां मुकाबला करने से जापान में होने वाले अगले इवेंट के लिए उनकी समझ और आत्मविश्वास बेहतर हुआ है। अपने पहले और दूसरे एशियन गेम्स के सफर के अंतर पर बात करते हुए आशी ने कहा, ‘एशियन गेम्स ओलिंपिक के बाद सबसे बड़े

मल्टी-स्पोर्ट टूर्नामेंट में से एक है और मैं वहां पहले भी मुकाबला कर चुकी हूं। मैंने उस मंच पर परफॉर्म किया है, इसलिए मुझे पता है कि इसके लिए क्या चाहिए। तीन पदक जीतने के बाद, अब मुझे इस लेवल पर मुकाबला करने का अच्छा अनुभव है। इसी वजह से इस बार मैं जापान एक क्लियर सोच और लक्ष्य के साथ जा रही हूं कि मुझे इस प्रतियोगिता में क्या हासिल करना है। एशियन गेम्स तक के सफर में कड़ी ट्रेनिंग शामिल थी, जिसके दौरान भारतीय शूटिंग टीम ने भोपाल में इंटेसिव कैंप में हिस्सा लिया।

राष्ट्रीय खेल दिवस: गृह मंत्री अमित शाह, खेल मंत्री मांडविया, संसदीय कार्य मंत्री रिजिजू ने युवाओं को मेजर ध्यानचंद से प्रेरणा लेने की अपील की

विश्व केसरी ■
नई दिल्ली। दिग्गज हॉकी की खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद की जयंती पूरे देश में राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाई जा रही है। इस अवसर पर गृह मंत्री अमित शाह, केन्द्रीय खेल मंत्री मनसुख मांडविया और संसदीय कार्य मंत्री और अल्पसंख्यक कार्य मंत्री किरन रिजिजू ने मेजर ध्यानचंद को याद करते हुए देशवासियों को राष्ट्रीय खेल दिवस की बधाई दी है। खेल मंत्री मांडविया ने इस अवसर पर देशवासियों से खुद को फिट रखने के लिए सप्ताह में कम से कम एक घंटा किसी खेल को देने की अपील की।



गृह मंत्री अमित शाह ने एक्स पर लिखा, ‘अपनी अद्भुत और असाधारण प्रतिभा से भारतीय हॉकी को विश्व पटल पर नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने वाले महान हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद जी की जयंती पर उन्हें कोटि-कोटि नमन एवं समस्त देशवासियों को ‘राष्ट्रीय खेल दिवस’ की हार्दिक शुभकामनाएं। मेजर ध्यानचंद का कौशल ऐसा था कि पूरी दुनिया उनकी हॉकी की कायल थी और

जन्मा ऐसा कि गुलामी के कालखंड में भी उन्होंने अपने खेल से भारत का गौरव बढ़ाया। उनका अनुशासन, प्रश्रम और राष्ट्र के प्रति समर्पण भारतीय खेल जगत की अमूल्य विरासत है, जो खिलाड़ियों व युवाओं को सदैव प्रेरणा देती रहेगी।

केन्द्रीय खेल मंत्री मनसुख मांडविया ने मीडिया से बात करते हुए कहा, ‘आज मेजर ध्यानचंद की 121वीं जन्म जयंती है। उनकी जयंती को हम राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाते हैं। इस अवसर पर पूरे देश में फिट इंडिया अभियान को आगे बढ़ाने के लिए

एक घंटे खेल के मैदान में कार्यक्रम होगा। देश के युवा लाखों की संख्या में अपने-अपने नजदीकी मैदान में गए हैं और खेल से जुड़ी गतिविधियां कर रहे हैं। उन्होंने कहा, ‘मुझे खुशी है कि पीएम मोदी के नेतृत्व में देश बदल रहा है। देश आगे बढ़ रहा है। देश का प्रतिभा हो रहा है। भारत के निर्माण में देश का युवा फिट हो, समाज फिट हो तभी राष्ट्र समृद्ध बनेगा। हमें हर सप्ताह एक घंटे खुद को मैदान में रखना चाहिए और खुद को फिट रखने की कोशिश करना चाहिए।’ वहीं, संसदीय कार्यमंत्री किरन रिजिजू ने एक्स पर लिखा, ‘राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर सभी को हार्दिक शुभकामनाएं। हॉकी के जादूगर, महान खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद की जयंती पर उन्हें कोटि-कोटि नमन। उनका अद्वितीय खेल कौशल, अनुशासन और समर्पण आज भी देश के खिलाड़ियों को प्रेरित करता है। आइए, खेलों को जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाकर स्वस्थ, सशक्त और खेल महाशक्ति बनते भारत के संकल्प को आगे बढ़ाएं।’

‘एक ओवर में चार छवकों ने गेम बदला,’ सेंट्रल दिल्ली किंग्स को फाइनल में पहुंचाकर खुश कप्तान जोंटी सिद्धू

विश्व केसरी ■
नई दिल्ली। सेंट्रल दिल्ली किंग्स शुक्रवार को पुरानी दिल्ली 6 के खिलाफ 72 रन से दमदार जीत दर्ज करते हुए फाइनल में पहुंची, जहां 30 अगस्त को उसका सामना साउथ दिल्ली सुपरस्टार्स से होगा। अरुण जेटली स्टेडियम में खेले गए क्वालीफायर-2 में किंग्स के कप्तान जोंटी सिद्धू ने 46 गेंदों में 10 छवकों और 5 चौकों के साथ 106 रन की नाबाद पारी खेली। उनकी इस पारी के दम पर टीम ने 20 ओवरों में 218/5 का स्कोर खड़ा किया, जिसके बाद पुरानी दिल्ली को 17.4 ओवरों में 146 रन पर समेट दिया। बतौर गेंदबाज जोंटी ने 3 ओवरों में 25 रन देकर 3 विकेट चटकाए। शानदार ऑलराउंडर प्रदर्शन के लिए उन्हें ‘प्लेयर ऑफ द मैच’ चुना गया। इस नॉकआउट मुकाबले में



अपने मैच जिताऊ प्रदर्शन पर बात करते हुए सिद्धू ने बताया कि जब टीम दबाव में थी, तब ऐसा प्रदर्शन करना बहुत संतोषजनक था। जीत के बाद उन्होंने कहा, ‘मैं बहुत खुश हूं। मैंने अपनी टीम के लिए बल्लेबाजी और गेंदबाजी, दोनों में अहम योगदान दिया। इस चरण पर

टीम को ऐसे ही प्रदर्शन की सबसे ज्यादा जरूरत थी, इसलिए मुझे खुशी है कि यह सही समय रहा हुआ।

जब शुरुआती विकेट गिर गए और अनुमानित स्कोर कम लग रहा था, तब सिद्धू और उनके साथी आदित्य भंडारी (ताबाद 24) ने

टीम को ऐसे ही प्रदर्शन की सबसे ज्यादा जरूरत थी, इसलिए मुझे खुशी है कि यह सही समय रहा हुआ। जब शुरुआती विकेट गिर गए और अनुमानित स्कोर कम लग रहा था, तब सिद्धू और उनके साथी आदित्य भंडारी (ताबाद 24) ने

एरिका मेरी आदर्श हैं और हमेशा रहेंगी: मीरा एंड्रीवा

विश्व केसरी ■
न्यूयॉर्क। ग्रैंड स्लैम चैंपियन और ओलंपिक में रजत पदक जीतने वाली मीरा एंड्रीवा ने कहा कि उनकी बड़ी बहन एरिका हमेशा से उनकी रोल मॉडल रही हैं। यूएस ओपन मीडिया डे के दौरान 19 साल की मीरा ने बताया कि कैसे एरिका के साथ बड़े होने से एक टेनिस प्लेयर के तौर पर उनके विकास और कोर्ट से दूर उनकी जिंदगी दोनों पर असर पड़ा।

डब्ल्यूटीए के हवाले से मीरा ने कहा, ‘मुझे लगता है कि मुझे ज्यादा फायदा हुआ क्योंकि मैं छोटी हूं। टेनिस के मामले में, मुझे उतने टूर्नामेंट नहीं खेलने पड़े जितने उन्होंने खेले, और शायद इससे मेरा कुछ समय बच गया। वह हमेशा स्कूल में मेरी मदद करती थीं। वह मुझे बहुत सारी सलाह भी देती थीं। मैं हमेशा उनकी कॉपी करती थी, क्योंकि वह मेरी रोल मॉडल थीं और अब भी हैं।’

प्रोफेशनल टेनिस में एक जैसे रास्ते पर चलने के बावजूद, बहनों ने कॉम्पिटिशन को अपने रिश्ते को तय करने से रोका है। एंड्रीवा ने कहा, ‘हम कभी भी एक-दूसरे के साथ सच में प्रतियोगी नहीं थीं। हमारे माता-पिता हमेशा हमसे कहते थे कि हम बहनें हैं,



इसलिए हम जिंदगी में सबसे करीबी लोग हैं, और हमें हमेशा एक-दूसरे को सपोर्ट करना चाहिए।

हम साथ में ज्यादा अभ्यास नहीं करते थे, क्योंकि इससे गड़बड़ हो जाती थी। एक-दूसरे और हमारे रिश्ते के बीच नहीं, लेकिन बस—मुझे नहीं पता। मुझे गुस्सा आता, उसे दुख होता कि

मैं गुस्सा हूं, फिर मुझे दुख होता कि वह दुखी है।’ एंड्रीवा अपनी पीढ़ी के जाने-माने नामों में से एक बनकर उभरी हैं, वहीं एरिका ने भी अपना एक सफल करियर बनाया है। बड़ी एंड्रीवा अक्टूबर 2024 में वर्ल्ड नंबर 65 की करियर-हाई रैंकिंग पर पहुंचीं और पांच आईटीएफ एकल खिताब जीते हैं। उनका सबसे हालिया खिताब मई में जाग्रैब में डबल्यू 75 टूर्नामेंट में आया था। विंबलडन 2025 के बाद लंबे ब्रेक के बाद एरिका ने रैंकिंग में भी काफी तरक्की की है। टॉप 200 में वापसी के करीब पहुंचते हुए वह लगभग 150 स्थान ऊपर चढ़ी हैं। पेशेवर सर्फिट में खुद को स्थापित करने से पहले, एरिका ने खेल के टॉप जूनियर्स में शामिल होने के साथ आने वाले दबाव का अनुभव किया। वह 2021 में फ्रेंच ओपन में लड़कियों के फाइनल में पहुंचीं, जहां वह लिंडा नोस्कोवा से हार गईं। एरिका का यूएस ओपन का सफर शुरुआती राउंड में ही खत्म हो गया। हालांकि, इस हफ्ते बहनों के यूएस ओपन कैंपेन ने अलग मोड़ लिया है। एरिका का रन शुरुआती राउंड में ही खत्म हो गया। मीरा का ध्यान अब यूएस ओपन एकल कैंपेन पर है।